मध्य रेल

# रेल सुरभि

अंक – 34

अप्रैल – जून 2023

## संविधान की अष्टम अनुसूची मे उल्लिखित भाषाएं

मुख्यालय राजभाषा विभाग की त्रैमासिक गृह पत्रिका

# रेल सुरभि
# अंक 34
# (अप्रैल-जून, 2023)


**-:संरक्षक:-**
नरेश लालवानी
महाप्रबंधक

**:- मार्गदर्शक:-**
रेणू शर्मा
प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी
तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी

**:-प्रधान संपादक:-**
विपिन पवार
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

**:-संपादक:-**
दीपा मंद्यान
राजभाषा अधिकारी(मुख्यालय)

**:-सहयोग:-**
मोहन आवलेकर, वरिष्ठ अनुवादक
हरी प्रकाश श्रीवास्तव, वरिष्ठ अनुवादक
राकेश पांडे, कनिष्ठ अनुवादक
डॉ. वीरेंद्रसिंह राव, कनिष्ठ अनुवादक
देविना चौकसे, कनिष्ठ अनुवादक
रामेश्वर राठौर, कनिष्ठ आशुलिपिक



**संपर्क का पता**
महाप्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग
नया प्रशासनिक भवन, मध्य रेल, मुंबई छशिमट
फोन : 54753/54752/54754 (रेलवे)
022-22697123 (एमटीएनएल)
ई-मेल : dgmol12@gmail.com



पत्रिका में प्रकाशित सभी विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। उन्हें भारत सरकार या रेल मंत्रालय के विचार न समझा जाए । रचनाकार अपनी रचना की मौलिकता के लिए स्वयं जिम्मेदार है।

## अनुक्रमणिका


| क्र. | रचना का नाम | विधा | रचनाकार (श्रीमती/सर्वश्री) | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|---|
| 1 | रुलाऊ साहब | कहानी | विपिन पवार | 07 |
| 2 | पहला कदम | कविता | नीलम चंद्रा | 17 |
| 3 | ताई | कविता | विपिन पवार | 18 |
| 4 | मेरे मामा | कविता | मनीष एस. बापट | 19 |
| 5 | शताब्दी वर्ष | कविता | राजेश कनोजे | 20 |
| 6 | यह न भूलें कि हिंदी हमारे रोजगार की भाषा भी है | लेख | देवेंद्र सोनी | 21 |
| 7 | तेरी वो मुस्कुराहट | कविता | अमरजीत कुमार | 22 |
| 8 | पतंग की तरह होना चाहती मेरी ज़िंदगी | कविता | कृतिकार्थ तिवारी | 23 |
| 9 | बड़ा दिन | कहानी | विनोद कुशवाहा | 28 |
| 10 | आलो अंधारी | समीक्षा | राजश्री बिराजदार | 32 |
| 11 | मनुज को देव बना दे | कविता | धर्मेंद्र शर्मा | 34 |
| 12 | जिज्ञासा और आकर्षण के केंद्र नर्मदापुरम की आदमगढ़ पहाड़ी के शैलचित्र | लेख | सुश्री आहना शंकर दुबे | 35 |
| 13 | मन जलता है | कविता | संकल्प वर्मा | 38 |
| 14 | एक था अर्जुन | कहानी | स्वर्णलता छेनिया | 39 |
| 15 | मेहनत | कविता | सत्येंद्र सिंह | 43 |
| 16 | राजभाषा कार्यान्वयन | लेख | धर्मेंद्र तिवारी | 44 |
| 17 | अंतिम श्रोता | कविता | स्वर्णलता छेनिया | 46 |
| 18 | अनचाही | कहानी | ममता राजेश टेंपे | 47 |


## मराठी खंड


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 19 | रेंज ने माणूस समृद्ध झाला | कविता | प्रफुल्लचंद्र सज्जन | 50 |
| 20 | आसाम, मेघालय, अरूणाचल | प्रवास वर्णन | राजश्री बिराजदार | 51 |
| 21 | फुलपाखरू | कविता | संजय उस्तुर्गे | 53 |
| 22 | सावित्रीबाई | कविता | मनोज ले. गावंडे | 54 |

## महाप्रबंधक का संदेश

### महाप्रबंधक का सन्देश

मैं सभी रेलकर्मियों एवं साहित्य प्रेमियों को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन हेतु एक उत्तम मंच देने के लिए राजभाषा विभाग की सराहना करता हूँ। यह प्रसन्नता की बात है कि प्रत्येक अंक के लिए आने वाली रचनाओं की संख्या में वृद्धि हो रही है।

लेखन की कला अपने आप में एक अद्वितीय हुनर है, यह हर किसी में नहीं पाई जाती। कलम तलवार से ताकतवर होती है। जिन भावनाओं को वाणी में बयां नहीं किया जा सकता, उन्हें कलम के माध्यम से बखूबी व्यक्त किया जा सकता है। आजकल के भागदौड़ भरे जीवन में तनाव से बचने के लिए लेखकों के पास कलम एक सशक्त साधन है और राजभाषा विभाग इस पत्रिका के माध्यम से आपको प्रत्येक तीन माह में यह अवसर दे रहा है। रेल सुरभि में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ उनके परिजनों की छपी रचनाएं देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है। भिन्न-भिन्न विधाओं की रचनाओं से परिपूर्ण प्रत्येक अंक में लेखन का उच्चतम स्तर देखकर प्रसन्नता होती है।

इसके अतिरिक्त मैं उप महाप्रबंधक (रा.भा.) श्री विपिन पवार को भी उनके अंतिम और नियमित नौ वर्षों के सफल संपादन के लिए शुभकामनाएं देना चाहूंगा।

आशा है आप सभी अपना लेखन जारी रखेंगे और पाठक भी अपने भीतर के कलाकार को पहचान कर अगले अंक के लिए अपनी रचनाएं भेजेंगे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ आप सभी को बधाई।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

**धन्यवाद ।**

नरेश 03/8/23

**(नरेश लालवानी)**
**महाप्रबंधक**

# मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश

## मुराधि का संदेश

राजभाषा विभाग की गृह पत्रिका 'रेल सुरभि' का नवीनतम अंक आप सभी के साथ साझा करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। मुख्य राजभाषा अधिकारी के रूप में मैंने हाल ही में पदभार ग्रहण किया है और पठन-पाठन में प्रारंभ से ही मेरी रुचि होने के कारण मैं पहले से 'रेल सुरभि' की नियमित पाठक रही हूं तो निःसंदेह यह अंक मेरे लिए और अधिक विशेष है।

रेलवे बोर्ड की पहल के अनुसार पत्रिका में हिंदी रचनाओं के साथ साथ मराठी की रचनाओं को शामिल करना एक अच्छा कदम है। अभी मराठी खंड हेतु आने वाली रचनाओं की संख्या कम है। मैं आप सभी मराठी भाषी पाठकों से अनुरोध करना चाहूंगी कि आप अपनी मराठी भाषा मे रचित रचनाओं को अधिक से अधिक हमसे साझा करें। हम आपकी रचना को रेल सुरभि में स्थान देने का पूरा प्रयत्न करेंगे।

साथ ही मैं उप महाप्रबंधक (राजभाषा) विपिन पवार जी को पिछले नौ वर्षों से इस पत्रिका का सफल निरंतर संपादन करने के लिए बधाई देना चाहूंगी। कार्यकाल में रेल सुरभि ने नए आयामों को छुआ है जो कि सराहनीय है। लगभग एक दशक से सफल संपादन के लिए मैं उन्हें ढेरों शुभकामनाएं देती हूं। आशा करती हूँ कि पाठकों को इस बार भी यह अंक अवश्य पसंद आएगा। अगले अंक में आपकी रचनाओं के साथ आपके सुझावों की भी प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद ।

रेणू

**(रेणू शर्मा)**
**मुख्य राजभाषा अधिकारी**
**एवं**
**प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी**

## संपादकीय

निरन्तर नौ वर्षों से रेल सुरभि का संपादन करना मेरे लिए हर्ष और गौरव की बात है। अब अंतिम बार आपके सामने संपादक के रूप में उपस्थित हूँ। मध्य रेल मुख्यालय राजभाषा विभाग द्वारा त्रैमासिक पत्रिका रेल-सुरभि का 34वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। पहले हमारी पत्रिका छह माह में एक बार छपती थी किन्तु पाठकों की इसमे बढ़ती रुचि और हर अंक की बेसब्री से हो रही प्रतीक्षा ने हमें इसे नियमित तौर पर छापने के लिए प्रेरित किया और कोविड महामारी के दौरान जब रेल सुरभि का मुद्रण सम्भव न था तब अथक प्रयासों से इसका ई-प्रकाशन प्रारंभ हुआ। अपने कार्यकाल के दौरान रेल सुरभि के संपादक की भूमिका निभाना मेरे लिए चुनौतीपूर्ण तो था किंतु आनंद से परिपूर्ण भी था।

साहित्य का कर्तव्य मात्र ज्ञान देना नहीं है परंतु एक नया वातावरण देना भी है और इस अंक में प्रकाशित रचनाएं इस कथन का पूर्णतः समर्थन करती हैं। आपको बताते हुए हर्ष भी हो रहा है कि रेल-सुरभि के पाठक और प्रकाशन हेतु आने वाली रचनाएं दोनों में ही बढ़ोतरी हुई है।

अपनी विचारधारा, मनोभाव और विवेकबोध का उम्दा मिश्रण शब्दों के माध्यम से रचनाओं के रूप में बड़ी सुंदरता से प्रस्तुत करते हुए आज के नवोदित युवा लेखकों द्वारा भेजी रचनाओं को पढ़ने में बड़ा आनंद आता है । महात्मा गांधी ने कहा है - "उत्तम लेखन कला के लिए आवश्यकता बुद्धि और हृदय की है धन की कदापि नहीं" उत्तम लेखक पाठकों के हृदय तक अपना मार्ग स्वयं बना लेता है। 34वां अंक भी आपको ऐसी ही श्रेष्ठ रचनाओं से परिपूर्ण मिलेगा।

हमेशा की तरह इस बार भी आप सभी ने इस पत्रिका को सफल बनाने में अपना अमूल्य सहयोग किया जिसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। इस बार भी रेल-सुरभि के इस अंक के लिए आपकी प्रतिक्रियाएं प्रतीक्षित रहेंगी। साथ ही अपने सभी नियमित पाठकों को मैं धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने रेल सुरभि को इतना सराहा ।

अलविदा!

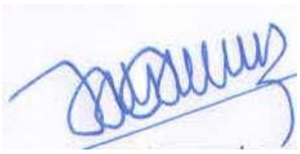

**(विपिन पवार)**
**उप महाप्रबंधक**
**(राजभाषा)**

## स्वागत

## हमारी नई मुख्य राजभाषा अधिकारी

श्रीमती रेणू शर्मा भारतीय रेल कार्मिक सेवा के माध्यम से दिनांक 16.09.1991 को रेल सेवा में नियुक्त हुई । आप प्रारंभ से ही कुशाग्र बुद्धि, दृढ़ निश्चयी, कर्तव्यनिष्ठ, ऊर्जावान, महिला शक्ति के लिए प्रेरणादायी है। आपने अपनी रेल सेवा की शुरुआत पूर्वोत्तर रेल के लखनऊ मंडल में सहायक कार्मिक अधिकारी के रूप में की, तत्पश्चात गोरखपुर मंडल में वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी, लखनऊ मंडल में मंडल कार्मिक अधिकारी और वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी, उत्तर रेल में उप मुख्य कार्मिक अधिकारी, पूर्व रेलवे कलकत्ता में मुख्य कार्मिक अधिकारी, मॉडर्न कोच फैक्ट्री, रायबरेली में मुख्य कार्मिक अधिकारी, अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन, लखनऊ में प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी तथा मध्य रेल के पुणे मंडल में मंडल रेल प्रबंधक के पद पर अपनी सेवाएं दे चुकी हैं।

मंडल रेल प्रबंधक के पद पर रहते हुए आपने प्रशासनिक नियंत्रण, विभिन्न विभागों में सामंजस्य बैठाना, गाड़ियों के संचलन, समय पालन, गाड़ी परिचालन, यात्री सुरक्षा, क्षमता बढ़ाना, मानव शक्ति की योजना, मांग बजट पर नियंत्रण जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए। साथ ही आपने राजस्व बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए। आपने केंद्र/राज्य सरकार और जन प्रतिनिधियों के बीच बेहतर तालमेल बैठाया । साथ ही आपको ओपन लाइन और उत्पादन इकाई में मानव संसाधन प्रबंधन का भी अनुभव है।

वर्तमान में आप मध्य रेल पर प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी के पद पर तैनात है। आप बहुमुखी प्रतिभा की धनी, कुशल वक्ता, हिंदी प्रेमी, कर्मचारियों की हितैषी, प्रखर व्यक्तित्व की धनी है। आपके मार्गदर्शन में मध्य रेल नई ऊचाइयों को छुएगा तथा राजभाषा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति करेगा।

## रुलाऊ साहब

***-विपिन पवार***

''देखो, तुम अपने आपको ज्यादा स्मार्ट मत समझो, मैं जब डंडा चलाऊंगा न तो तुम रोने लगोगे और तुम्हारी सारी स्मार्टनेस निकल जाएगी। समझे ! वैसे भी मुझे यहां सब लोग रुलाऊ साहब ही कहते हैं। अब जाओ, दफा हो जाओ यहां से ।''

अजय जब उप्रेती साहब के कमरे से बाहर निकला, तो अपमान की आग में जलने के कारण उसकी आंखों से लावा बरस रहा था । समझते क्या हैं अपने आपको ?इतना गंदा व्यवहार करने की तो जरूरत ही नहीं थी । आखिर उसकी गलती क्या है ?यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था । उसे अपनी पिछली जिंदगी याद आने लगी । भले ही पैसा नहीं था लेकिन सुख-शांति तो थी ।

अजय राऊत रसायन विज्ञान में एम.एस.सी. था। नागपुर के निकट बुटीबोरी एम.आई.डी.सी. में पोरवाल केमिकल इंडस्ट्री में काम करता था । पोस्ट तो सुपरवाइजर की थी लेकिन काम और वेतन मजदूरों जैसा था । दो साल के बाद एक शाम जब वह पैसेंजर से घर वापस नागपुर लौट रहा था तो वासनिक काका ने उसके हाथ में एक अखबार थमाते हुए बताया कि इसमें तुम्हारे लायक एक नौकरी निकली है । वर्धा रोड पर स्थित केंद्रीय सरकार के एक उपक्रम में एक लिपिक की जगह का विज्ञापन निकला था । उसने दूसरे ही दिन आवेदन कर दिया, जल्दी ही साक्षात्कार के लिए बुलावा आया, उसका चयन हो गया और वह उस उपक्रम में प्रवर लिपिक का काम करने लगा ।

स्थापना अनुभाग में जाने पर उसकी मुलाकात अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से हुई –

''मेरा नाम वीरसिंह है, मैं यहां आपके अधीन अवर लिपिक हूं और यह प्रभाकर आगलावे हमारा टाइपिस्ट है ।''एक नाटे एवं मोटे से व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए उसने कहा । वह एक लंबा सा हँसमुख चेहरे वाला लड़का था ।

क्या आगलावे अपना परिचय खुद नहीं दे सकता था ?उसने प्रभारी के सुर में कहा । वीरसिंह खिसिया गया और आगलावे उसकी ओर घूरकर देखने लगा ।

पिछली नौकरी में लगभग सारे काम वह सीख चुका था क्योंकि जब भी कोई छुट्टी पर जाता या नौकरी से निकाल दिया जाता तो उसके छुट्टी से वापस आने या नया आदमी रखे जाने तक उसका काम उसे ही करना पड़ता था । निजी नौकरी में उसे इससे बड़ा फायदा होता था, मालिक उससे हमेशा खुश रहा करता था । वह भी पूरे जोश एवं उत्साह के साथ काम करता था । सरकारी नौकरी में आने पर उसे यहां की कार्य प्रणाली एवं शिष्टाचार सीखने में काफी समय लग गया । उसे जो भी काम बताया जाता, वह पूरी निष्ठा, समर्पण एवं लगन के साथ करता था । स्थापना अनुभाग का काम हो, अनुवाद का काम हो, सूचना पत्र के प्रकाशन का काम हो, किसी के विदाई समारोह का संचालन करना हो, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस के आयोजन की पूर्व तैयारी हो, उपक्रम का स्थापना दिवस हो, उसने कभी काम से इंकार नहीं किया । इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे अधिकारी उसे पसंद करने लगे । लेकिन पता नहीं क्यों उप्रेती साहब को उसकी प्रशंसा जरा भी नहीं सुहाती थी ।

रतनलाल उप्रेती यानि आर.एल.उप्रेती – आर.एल.यू अर्थात रुलाऊ । गेहुंआ रंग, औसत कद, सारे शरीर पर रीछ जैसे बड़े-बड़े बाल, सुनहरी फ्रेम की सेठों जैसी ऐनक, पुरानी सी मारूति 800 के मालिक उप्रेती साहब में कोई खास बात नहीं थी, सिवाय इसके कि वे अपने सामने अपने अधीनस्थ

अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कुछ भी नहीं समझते थे । आई.आई.टी. कानपुर से एम.टेक थे । भारतीय इंजीनियरी सेवा के माध्यम से नौकरी में आए थे । साइंटिस्ट 'जी' थे । उनकी पत्नी भारतीय राजस्व सेवा की अधिकारी थी, जो आयकर आयुक्त के पद पर नागपुर में ही पदस्थ थी । एक बेटा और एक बेटी ।

उपक्रम में स्थापना दिवस काफी धूमधाम से मनाया जाता था । तीन दिनों तक लगातार कार्यक्रम चले रहते थे । काफी पहले से ही सभी को तैयारियों में जुट जाना पड़ता था । विभाग के केन्द्रीय मंत्री स्वयं मुख्य अतिथि के रूपमें उपस्थित रहते थे । इस बार उसे उपक्रम की स्मारिका निकालने का कार्य सौंपा गया था । एक दिन चपरासी रघु उसके पास आया और कहा कि –

''आपको उप्रेती साहब ने बुलाया है ।''

''ठीक है''कहकर वह उप्रेती साहब के कमरे की ओर चल पड़ा । सामने स्टूल पर बैठे चपरासी नारायण को उसने बताया कि उसे साहब ने बुलाया है, तो नारायण अंदर गया और बाहर आकर बोला –

''साहब ने इंतजार करने को कहा है । अभी बुलाएंगे और कहा है कि यही इंतजार करने को कहो ।''

वहां स्टूल के अलावा बैठने की कोई जगह नहीं थी, लिहाजा उसे वहीं बाहर खड़े रहना पड़ा । पांच मिनट, दस मिनट..........वह ऊब गया, जब आधा घंटा बीत गया तो उसने अंदर जाने के लिए कदम बढाया ही था कि नारायण बोल पड़ा—

''सुनिए, साहब बुलायेंगे । अंदर मत जाइए । वे नाराज होंगे ।''

लेकिन वह आगे बढ़ा और उसने दरवाजा खोला और दो कदम अंदर जाकर कहा –

''सर, क्या मैं अंदर आ सकता हूं ?''

''अंदर तो तुम आ ही गए हो। जबकि हमने तुम्हें तो बाहर इंतजार करने को कहा था और यह लटके-झटके अपने पास रखो, अंदर आने की इजाजत मांगने का नाटक मत करो। ''वह कुछ समझ पाता उसके पहले ही उन्होंने दूसरा वार किया –

''हमने कई बार तुमसे इंटरकाम पर संपर्क करने का प्रयास किया या तो तुम्हारा फोन व्यस्त होता है या तुम इधर-उधर घूमते रहते हो । घंटी बजती रहती है । कोई उठाता नहीं जबकि तुम्हारे पास दो-दो जमूरे हैं न ?''

यह सुनकर तो उसे आश्चर्य का एक धक्का ही लगा क्योंकि आज तक ऐसा नहीं हुआ था । फोन व्यस्त हो सकता है, लेकिन यदि वह सीट पर नहीं है तो वीरसिंह या आगलावे तो फोन उठा ही लेते थे ।

यह उप्रेती साहब की कार्य प्रणाली का एक हिस्सा था कि जैसे ही अधीनस्थ अंदर प्रवेश करे तो उसे बेवजह डांट-डपट कर उसकी बोलती बंद कर दो ताकि बाद में वह कुछ बोलने की स्थिति में ही न रहें, विरोध या प्रतिरोध के बारे में तो सोच भी न पाएं ।

होते हैं इस तरह के कुछ अधिकारी, जो अपनी संपन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि, उच्च शिक्षा, बड़े पद के दंभ के कारण प्रतिरोध के स्वर नहीं सुन सकते, इन स्वरों में उन्हें अपनी व्यक्तिगत हार की झलक दिखलाई देती है ।इस प्रकार के अधिकारी अभी भी अधीनस्थों को गुलाम ही समझते हैं । वास्तव में इस प्रकार के अधिकारी इसलिए विचार-विमर्श एवं वार्तालाप से बचने का प्रयास करते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि यदि वे अपने अधीनस्थों के तर्कों को नहीं काट पाए, तो उन्हें उनकी बात माननी होगी और बड़े साहब कर्मचारी की बात कैसे मान सकते हैं, भले ही वह सही हो ।''

उसने अपनी स्थिति स्पष्ट करने के लिए और अपने ऊपर लगाए जा रहे मिथ्या आरोपों का खंडन करने के लिए बोलना प्रारंभ किया तो उप्रेती साहब ने उसे हाथ के इशारे से चुप करा दिया । वे फाइल पर कुछ लिख रहे थे । टेंडर की फाईल थी, दस मिनट तक लिखते रहे, बीच में इंटरकॉम पर किसी से तीन-चार मिनट बात भी कर ली........वह स्थितप्रज्ञ-सा उनके सामने खड़ा रहा । सत्ताईस साल का युवा कसरती शरीर, पर कितनी देर खड़ा रहेगाऔर खीझ के कारण अब उसकी टांगे दर्द करने लगी, तो वह सामने पड़ी तीन कुर्सियों में से एक पर बैठ गया । जैसे ही वह बैठा, उप्रेती साहब ने उसकी ओर तीखी नजरों से देखा, लेकिन वह नहीं उठा, सोचा जो हो, देख लिया जाएगा । साहब ने टी सी पर अपनी टिप्पणी पूरी की तो उसे लगा कि चलो, उसकी प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त हुई, उसने कुछ  कहना चाहा तो उन्होंने लपककर फोन उठाया और फोन पर किसी से पारिवारिक बातें करने लगे । दस मिनट बाद उन्होंने फोन रखा और कहा कि –

''एक तो तुम बिना पूछे हमारे कमरे में घुस आते हो, उपर से बिना पूछे हमारे सिर पर आकर बैठ जाते हो........हमारी सारी बातें सुनते रहते हो.......ये क्या बदतमीजी है ?''

कुछ अधिकारी ऐसे होते हैं, जो कमरे में प्रवेश करते ही बैठने के लिए कहते हैं, कुछ यदि फोन या किसी काम में व्यस्त होते हैं तो इशारे से बैठने के लिए कहते हैं, कुछ तो ऐसे होते हैं जो कहते हैं कि –

''यार, दरबान की तरह मेरे सामने आकर खड़े मत रहा करो । बैठ जाया करो । न तो मैं राजा हूं और न ही तुम प्रजा हो। हम सब सरकार के नौकर हैं, मजदूर हैं, मजदूरी के लिए ही तो हम सब काम करते है ।हां, यह बात अलग है कि किसी को कम मजदूरी मिलती है तो किसी को ज्यादा ।''

मेरा सारा उत्साह तो ठंडा पड़ ही चुका था फिर भी मैंने हिम्मत करके पूछा कि –

''सर, बताइए कि क्या काम है ?''

''अरे भाई !तुम्हें निदेशक साहबने स्मारिका का संपादक बनाया है, काम शुरू कर दो, पत्रिका समय पर निकलनी चाहिए''

''ठीक है सर''कहकर वह बाहर निकल आया ।

लंच टाइम हो चुका था । लंच हम तीनों साथ ही लिया करते थे । वीरसिंह एवं आगलावे दोनों लंबे समय से उसका इंतजार कर रहे थे और भूख के कारण अब उनका इंतजार खीझ में बदलने ही वाला था कि उसने कमरे में घुसते ही कहा  --

''मुझे भूख नहीं है, तुम लोग खा लो, और हां ! मेरा टिफिन भी खा लेना । ''

''देखिए सर, खाने पर गुस्सा निकालना अच्छी बात नहीं है, जिसका गुस्सा उसी पर उतारना चाहिए''वीरसिंह ने कहा और मुझे दोनों हाथों से पकड़कर कुर्सी पर बैठा दिया ।

''सर, आप नहीं खाएंगे तो हम भी नहीं खाएंगे ।''आगलावे ने मुंह खोला । तो उसे आश्चर्य हुआ । आगलावे बहुत कम बोलता था। उसे अच्छा लगा ।

उसे मां की याद आ गई । बचपन में जब वह रूठ जाता था तो काफी समय तक खाना नहीं खाता था । रात दस बजे मां चिल्लाती थी कि अब मैं चौका बरतन कर रही हूं.........खाने आजा ।'' वह नहीं सुनता था और सिर पर ऊपर तक चादर ताने अंदर भूख के मारे रोता रहता था । मां कहती थी............मर भूखा ।''ग्यारह बजे जब सब सो जाते थे तो वह चुपके से उठता था और रसोई में खटर-पटर करने लगता था और मां तत्काल रसोई में आ जाती थी और कहती थी ---

''रूक जा । खाना गरम कर देती हूं । मैंने भी नहीं खाया है ।''

वीरसिंह के टिफिन में सोयाबीन के गट्टे की सब्जी थी, जो उसे बेहद पसंद थी । मन न होने पर भी वह खाने बैठ गया । खाते-खाते उप्रेती के कमरे में जो कुछ भी हुआ वह दोनों को बताते जा रहा था ।

''पता नहीं साला क्या समझता है अपने आपको ?''इतना घमंड कि खुद को ''मैं''तक नहीं कहता, ''हम''कहता है, हम ऐसा डंडा चलाएंगे......हम तो सबको रूलाकर ही छोड़ते हैं ।''तुम लोगों को पता है न कि ''मैं'एकवचन होता है और ''हम''बहुवचन । हम का प्रयोग केवल दो ही लोग करते हैं नेता और पागल । ''वह बड़बड़ाता जा रहा था जबकि लंच टाइम समाप्त हो चुका था ।

उसने बड़े मोटे अक्षरों में टाइप कराकर ड्यूटी लिस्ट अनुभाग की दीवार पर चिपका दी । स्मारिका के अलावा और भी बहुत से ऐसे काम थे, जिनमें उसे सहयोग करना था । तीन समूहों में उसका नाम झलक रहा था । पत्रकारिता एवं जनसंचार में डिप्लोमाधारी होने के कारण उसे पता था कि एक पत्रिका निकालने में कितने पापड़ बेलने पड़ते है ?सबसे बड़ी समस्या तो धनराशि की आती है, जो सरकारी उपक्रम होने के कारण यहां नहीं थी । वरना विज्ञापन जुटाते-जुटाते नानी याद आ जाती है । उसने संपादक मंडल के गठन का प्रस्ताव तैयार किया । संरक्षक प्रबंध निदेशक को बनाया, प्रधान संपादक उप्रेती को और वह खुद संपादक बन गया, वीरसिंह को उपसंपादक और आगलावे को सहयोग में डाल दिया । फाइल लेकर वह खुद गया उप्रेती के पास तो उन्होंने एक नजर फाइल को देखा और कहा-

''वहां उस मेज पर पीछे की ओर रख दो'', उसे पता है कि वहां वे फाइलें रखी जाती थी, जिनका कभी नंबर ही नहीं लगता था ।

तीन दिन तक वह बाकी के काम निपटाता रहा । उम्मीद तो नहीं थी संपादक मंडल के गठन की फाइल निकलने की। लेकिन जब उसने उप्रेती की स्टेनो लक्ष्मी से फाइल के बारे में पूछा और जब उसने इस बारे में अपनी अनभिज्ञता जाहिर कर दी तो वह सीधा उप्रेती के कमरे में पहुंच गया । इससे पहले कि वह कुछ बोलता अपनी आदत से मजबूर उप्रेती ने चिल्लाना शुरू कर दिया –

''अरे !तुम क्या करते रहते हो, अभी तक तुमने स्मारिका के प्रकाशन के लिए टेंडर का प्रारूप प्रस्तुत नहीं किया है....................।''

''सर...........सर........., निविदा, टेंडर का काम तो मुझे नहीं आता, मैं तो क्लर्क हूं........मैंने कभी यह काम किया नहीं है..........मैं.... ''उप्रेती ने उसे बीच में ही टोककर कहना शुरू कर दिया ।

''अबे, सर के बच्चे.......लगे तुरंत सरसराने......बड़े बहानेबाज हो, तुम बाबुओं से तो भगवान बचाए । यह काम नहीं आता, वह काम नहीं आता.......कभी किया नहीं है, मेरा काम नहीं है । अरे हम तो जब नए-नए नौकरी में आए थे न... तो कभी ड्राइवर न आए तो खुद ही जीप लेकर साइट पर निकल पड़ते थे ।''

''सर........वह संपादक मंडल के गठन वाली फाइल निकल जाती तो.........''उसने कुछ कहने की कोशिश की ।

''अब बाबू मुझे आदेश देगा कि फाइल कब निकालनी है ? गेट लॉस्ट । जो कहा गया है पहले उसे तो करो ।''उप्रेती ने गुस्से से कहा ।

उसकी आंखे डबडबा गई । उसे समझ में ही नहीं आ रहा था कि आखिर क्यों उसके साथ इस प्रकार का कठोर व्यवहार किया जा रहा है ?धीरे-धीरे पूरे कार्यालय में यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई कि नए बाबू अजय राउत को उप्रेती बहुत रूला रहा है ।

किसी ने उसे सलाह दी तो वह टेंडर का प्रारूप बनवाने के लिए कांट्रेक्ट अनुभाग में चला गया । कांट्रेक्ट अनुभाग के प्रभारी दामले बड़े सज्जन व्यक्ति थे , उसके साथ हो रहे दुर्व्यवहार की खबर उन तक भी पहुंच चुकी थी । वे उससे उम्र में बहुत बड़े थे । उन्होंने बड़े स्नेह से उससे पूछा कि क्या हाल है अज्जू? कैसे चल रहा है ? तो उसकी तो रूलाई ही फूट पड़ी । उन्होंने उसके कंधे पर स्नेह से हाथ रखा......हल्का सा दबाव बनाया और कहा कि सब ठीक हो जाएगा, टेंडर का प्रारूप, विज्ञापन, जीसीसी, टीसी, कांट्रेक्ट आदि सब काम वे कर देंगे, तुम बस चिंता मत करो ।''उसे बड़ी राहत महसूस हुई । उसके मुंह से निकल ही गया-

''देखना, दामले साहब । इस आदमी का कभी भला नहीं होगा । यह आदमी जिस तरह से मुझे रूला रहा है न, एक दिन खुद इतना रोएगा कि आंसुओं के सैलाब में बह जाएगा ।''

''न......न......अजय.......ऐसा नहीं कहते । बुराई के बदले में यदि तुम भी बुराई करो तो इससे तो दुनिया में बुराई ही फैलेगी.........अच्छाई धीरे-धीरे समाप्त होती जाएगी। ''दामले ने अजय को समझने की कोशिश की ।

''मैं हाडमांस का पुतला साधारण सा मनुष्य हूं, दामले साहब, भगवान नहीं''सुनकर दामले सिर्फ मुस्कुराकर रह गया था ।

उस दिन जब दामले ने उसे इंटरकॉम पर बताया कि टेंडर तैयार है तो उसे लगा कि रेगिस्तान की तपती धूप में लंबी यात्रा के बाद अचानक उसे एक पेड़ की छांव मिल गई हो और दामले ने उसे ठंडे पानी की एक बोतल पकड़ा दी हो । अपने काम से फुरसत पाकर दामले उसके टेंडर का काम करता रहा । हफ्ते भर में प्रारूप तैयार हो गया । उस दिन लंच के बाद जब वह टेंडर के कागजात का जेरॉक्स करवाने पुस्तकालय में गया तो उसके हाथ में डॉ. दामोदर खड़से का उपन्यास, ''काला सूरज''था, वह उसे वापस कर दूसरा कुछ पढ़ने के लिए लेना चाहता था । विज्ञान परास्नातक होने के

बादभी उसकी हिंदी साहित्य में गहन रूचि थी । वह गाहे-बगाहे साहित्य सृजन भी करता रहता था । पुस्तकालय में उसे स्टेनो विजया मिल गई, साहित्यिक अभिरूचि सम्पन्न होने के कारण उसकी विजया से खूब छनती थी, हालांकि विजया मराठी भाषी होने के कारण मराठी साहित्य ही पढ़ती थी । उसे देखते ही विजया ने मुस्कुराकर कहा –

''कैसे हो ? सुना बड़ी परेशानी है यहां तुम्हें ?''

''ठीक हूं ''कहने का रिवाज है लेकिन मैं कहूंगा नहीं क्योंकि मैं ठीक हालत में नहीं हूं । यदि किसी से पूछो कि क्या हाल है ?तो वह कहता है कि ठीक हूं फिर कहता है कि तुम्हें पता है.........मुझे कैंसर की संभावना बताई गई है, जांच चल रही है ।''

''अरे !इस ओर तो मेरा कभी ध्यान ही नहीं गया। वाकई हम कितनी भी परेशानी में क्यों न रहें''ठीक है''ही कहते हैं ।जरा बताना तो यह तुम्हारे हाथ में कौनसी किताब है ?..........डॉ. दामोदर खड़से........हिंदी में है......उपन्यास है........मैं हिंदी नहीं पढ़ती । कैसा लिखते हैं ?''पुस्तक विजया के हाथ में थी ।

''अतुलनीय......चमत्कृत कर देने वाली शैली है – जरूर पढ़ो– बल्कि इसी उपन्यास से हिंदी पढ़ना प्रारंभ कर दो ।''

विजया के हाथ में श्रीमती शुभांगी भड़भड़े का मराठी उपन्यास ''पद्मगंधा''था, जो वह पढ़ने के लिए घर ले जा रही थी । पुस्तक को हाथ में झुलाते-झुलाते उसने बताया कि कभी वह भी उप्रेती की स्टेनो हुआ करती थी और रुलाऊ साहब के लिए इस बातसे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उसे जिसको सताना है वह स्त्री है या पुरूष । हारकर विजया ने अपना तबादला आचार्य साहब के पास करा लिया था और समस्या से निजात पा ली थी । उसका कहना था कि उसे भी कुछ इसी तरह करना चाहिए, लेकिन उसने यह कहकर उसका सुझाव ठुकरा दिया कि यह तो डरकर हार मानना हुआ, जब मेरी कोई गलती ही नहीं है तो मैं क्यों डरूं ?

''तो रोते रहो...........इतना कहकर विजया मुस्कुराते हुए सीढ़ियां उतरने लगी ।

टेंडर की फाइल निपटाने में उप्रेती ने एक सप्ताह लगा दिया । उसे इस बात का अंदेशा था कि बाद में उप्रेती उसे बहुत रूलाएगा इसलिए उसने प्रकाशन सामग्री जुटाना प्रारंभ कर दिया था । सामग्री को टाइप कराना, मिलान करना, अनुवाद करना, फोटोग्राफ्स जुटाना, मंत्रियों एवं उच्चाधिकारियों के संदेश बुलवाना जैसे काम उसने पूरी निष्ठा, समर्पण एवं उत्साह के साथ किए और समय-समय पर उप्रेती उसे रूलाता रहा ।

पूरी निष्ठा, समर्पण एवं उत्साह के साथ कार्यालय समय के बाद भी एवं छुट्टियों के दिनों में भी लगातार काम करते रहने एवं उसके बदले में डंडा चलने के भय से वह घर पर भी दुखी रहने लगा । रात में दो-तीन बजे वह चौंककर अचानक उठ बैठता । उसे लगता अरे!फलाना काम तो रह गया.......वह काम मैंने पूरा किया था या नहीं.......याद नहीं आ रहा । उसकी नींद उचट जाती.....फिर वह बाकी रात छत की कड़ियां गिनते काट देता। इससे पारिवारिक जीवन अस्तव्यस्त हो गया । भारी तनाव, मानसिक पीड़ा, उपेक्षा, अपमान के कारण उसके सीने में कभी-कभी दर्द होता था । दम घुटता था । सांस लेने में परेशानी होती थी । लंच टाइम में उसने दोनों सहकर्मियों को बताया भी । वीरसिंह तो उसे तुरंत अस्पताल ले जाने की बात कहने लगा । लेकिन उसने कहा कि अभी दस-पंद्रह दिन ही तो रह गए हैं स्थापना दिवस के लिए । यह कार्यक्रम एक बार निपट जाए फिर पूरा चेकअप करा लेंगे ।

सारे काम समय पर पूरे हो गए । उसने और उसके सहयोगी वीरसिंह ने बड़े परिश्रम से स्मारिका का काम किया । विजया भी यथायोग्य मदद करती रही । मुख्य समारोह के एक दिन पहले उप्रेती ने उससे स्मारिका की डिलीवरी लेने को कहा । वह वीरसिंह के साथ दो चपरासियों को लेकर प्रिटिंग प्रेस पहुंचा । स्मारिकाओं के बंडल गाड़ी में लादे जा रहे थे । उसने प्रिंटिंग प्रेस के मालिक देशपांडे से स्मारिका की एक प्रति की मांग की तो उसने कहा कि मैंने सारी प्रतियां पैक करा दी है । हम कुछ प्रतियां रखते हैं, होंगी यहीं कहीं, देता हूं, लड़का आ जाए । काफी समय इंतजार किया न तो लड़का आया और न ही प्रति मिली । बाद में पता चला कि उसे उप्रेती ने सख्त हिदायत दी थी कि विमोचन से पहले स्मारिका की प्रति किसी को भी नहीं मिलनी चाहिए । उसने देशपांडे से कहा भी था कि वह तो इस स्मारिका का संपादक है, उसने इस स्मारिका के लिए बहुत मेहनत की है, उसकी कठोर मेहनत का फल उसे दिखा दिया जाए तो वह आज की रात चैन से सो पाएगा ।

यदि मैं तुम्हें स्मारिका दिखा दूंगा तो तुम आज की रात तो क्या ? कई रातों तक सो नहीं पाओगे, संपादक महोदय ! देशपांडे के होंठो पर कुटिल मुस्कान थी । जबकि इन पंद्रह दिनों में उसका देशपांडे के साथ काफी अच्छा तालमेल बैठ चुका था ।

रास्ते में उसने वीरसिह से कहा कि -

''यार, वीरसिंह किसी भी तरह कम से कम एक प्रति का जुगाड़ तो कर लो ।''

''जरूर । मैं पूरी कोशिश करूंगा ।''वीरसिंह ने पक्का आश्वासन दिया था और उसने अपना आश्वासन पूरा भी किया । स्टोरकीपर लिंगप्पा को मैनेज कर समारोह के एक दिन पहले एक प्रति जुटा ही ली ।

दूसरे दिन जब वह ऑफिस पहुंचा तो वीरसिंह पहले ही ऑफिस पहुंच गया था । उसका चेहरा उदासी की एक मोटी परत से ढंका हुआ था । उसने बिना कुछ कहे स्मारिका की एक प्रति उसकी ओर बढ़ा दी। मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक बन पड़ा था । पीला उसका पसंदीदा रंग था । उसने पीले रंग के अनेक शेडों जैसे गोल्डन येलो, कैनरी यलो, मस्टर्ड येलो, पैराडाइज यलो, डेजी यलो, सनफ्लावर यलो आदि के संयोजन से बड़ी कल्पनाशीलता एवं परिश्रम से मुखपृष्ठ तैयार करवाया था । उसे बड़ा अच्छा लगा। उसके चेहरे पर रौनक आ गई । समाधान एवं संतुष्टि की चमक उसकी आंखों से झर रही थी । फिर आज वीरसिंह क्यों उदास है ?

''वाह क्या बात है.......बल्ले......बल्ले.....वीरसिंह !जियो मेरे यार......''कितना सुंदर एवं आकर्षक बन गया है मुखपृष्ठ !पर तुम क्यों उदास हो ?''उसके प्रत्येक शब्द से खुशी एवं उमंग टपक रही थी।

''अगला पृष्ठ तो देख लीजिए सर जी ! ''लगा वीरसिंह की आवाज कहीं दूर किसी अंधेरे कोने से आ रही है ।

जैसे ही उसने अगला पृष्ठ देखा उसकी आंखे फटी की फटी रह गई.......पैरों तले की जमीन खिसक गई.......मुठ्ठियां भींच गई......संरक्षक- प्रबंधक निदेशक, प्रधान संपादक—उप्रेती, संपादक-रामकृपाल पांडेय, प्रशासनिक अधिकारी....उप्रेती का खास चमचा । नीचे कुछ नहीं........न उसका नाम न वीरसिंह का और न ही आगलावे का ।

वह अपनी सीटसे झटके से उठा और स्मारिका की प्रति लेकर आगे कदम बढ़ाया ही था कि वीरसिंह ने उसका रास्ता रोक लिया ।

''सर जी, क्या कर रहे हैं ? कहां जा रहे हैं ?''

''उप्रेती के....पास । साला......आज या तो वह रहेगा......या फिर मैं । मारे गुस्से, उपेक्षा एवं अपमान के कारण वह पत्ते की तरह कांप रहा था ।

''क्यों मेरी नौकरी खा रहे हैं आप? आपको पता नहीं कि एक प्रति का मैंने कितनी मुश्किल से जुगाड किया है । बंडल तो कल उप्रेती के सामने ही खुलेंगे और जब लिंगप्पा पर डंडा चलेगा तो वह मेरा नाम तो लेगा ही ।''यह सुनते ही वह धम्म से अपनी सीट पर नीचे बैठ गया ।

तीन-चार बार उप्रेती ने उसे किसी न किसी काम से बुलाया औरउसे कुछ कहने का मौका ही नहीं दिया । उसका हिंदी, मराठी, अंग्रेजी तीनों भाषाओं पर अच्छा अधिकार था इसलिए उपक्रम में जितने भी  समारोह होते थे, उनका संचालन उससे ही कराया जाता था । लिहाजा स्थापना दिवस जैसे सबसे बड़े समारोह के संचालन की जिम्मेदारी भी उसे ही दी गई थी । रातनौ बजे तक बैठकर सब लोग काम करते रहे। उसने विजया और वीरसिंह से इतना ही कहा कि मेरे मुंह में बत्तीस दांत है, जो कहता हूं, होकर ही रहता है । यह मेरा अनुभव है । हे भगवान ! रुलाऊ को इतना रुलाना कि उसका रूदन पूरी दुनिया सुन लें ।  उसका उत्साह समाप्त हो चुका था। बार-बार स्मारिका का वह पृष्ठ उसकी आंखों के आगे आ जाता, जिस पर से अंतिम क्षणों में उसका  नाम हटा दिया गया था । थकान के मारे बुरा हाल था । दूसरे दिन मंत्री जी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित समारोह का उसने संचालन किया । घंटे भर का कार्यक्रम था । उसने अपनी ओर से पूरी कोशिश की कि किसी को भी यह महसूस न हो कि वह उदासी के सागर में डूब चुका है। उसने कॉलेज के दिनों में कई नाटकों में प्रभावी एवं सफल अभिनय किया था । इस नाटक में भी उसका अभिनय सफल रहा ।

उप्रेती को छोड़कर सभी ने उसके संचालन एवं कार्य की प्रशंसा की । उसने कई बार उप्रेती से संपादक मंडल के गठन की फाईल तथा स्मारिका के बारे में बात करने की कोशिश की लेकिन हर बार उप्रेती बिना कोई जवाब दिए कन्नी काट जाता था । बाद के वर्षों में स्मारिका का काम उससे लेकर किसी और को दे दिया गया और उप्रेती ने वर्ष के प्रारंभ से ही यह कहना शुरू कर दिया था कि स्थापना दिवस समारोह का संचालन कोई सुंदर सी आकर्षक महिला करें, तो समारोह में चार चांद लग जाएंगे.............अजय राउत का व्यक्तित्व कोई इतना भी आकर्षक तो नहीं है कि हर बार उसे ही संचालन का दायित्व सौंपा जाए। उसने अप्रत्यक्ष रूप से एवं दबी जुबान से प्रबंध निदेशक तक सारी बाते पहुंचाने का असफल प्रयास किया, लेकिन वह तो प्रबंध निदेशक से कभी –कभी ही मिल पाता था और उप्रेती तो प्रबंध  निदेशक से दिन में कई बार मिल लेता था फिर कार्यालयों में यह कहा हीजाता है कि अधिकारी तो अंत में अधिकारी की ही बात को सही मानता है......न्याय-अन्याय.....पक्षपात.... तटस्थता आदि का कोई मतलब नहीं होता ।

समारोह आदि से निपटने के पश्चात उसने सरकारी अस्पताल में अपना पूरा मेडिकल चेकअप करवाया तो पता चला कि हृदय की एक धमनी में मामूली सा अवरोध है, जो दवाईयों से ठीक हो जाएगा । लेकिन दवाईयां नियमित रूप से लेनी होंगी, खानपान में विशेष परहेज रखना होगा। जीवन शैली बदलनी होगी तथा समय-समय पर चेकअप आदि कराते रहना होगा । उसने अपनी पत्नी, संगे-संबंधियों, मित्रों एवं सहकर्मियों, जो लगातार उसके स्वास्थ्य को लेकर चिंतित थे एवं पूछताछ करते रहते थे, से कहा कि इस उप्रेती ने मुझे रूलाया तो रूलाया लेकिन जीवन भर के लिए यह रोग दे दिया क्योंकि सरकारी अस्पताल के डॉक्टर सक्सेना ने एटेनाल शुरू कर दी थी और कहा था कि अब यह गोली तुम्हें जीवन भर लेनी होगी । अब वह पूरी तरह से ठीक हो चुका था । लेकिन रोज सुबह नाश्ते के बाद जब एटेनाल लेता तो पानी का घूंट भरते ही उप्रेती को कोसना नहीं भूलता था । छ: साल बीत

गए........वह एटेनाल लेता रहा......पानी पी पीकर उप्रेती को कोसता रहा, लेकिन उप्रेती हमेशा की तरह उसे एवं बाकी लोगों को रूलाता रहा ।

अब धीरे-धीरे उसका जी उपक्रम से उचटने लगा । काम में मन नहीं लगता था । उसने नियमित रूप से रोजगार समाचार पत्र एवं इंटरनेट पर नौकरियां खंगालना शुरू कर दिया । जल्दी ही उसकी नजर में एक विज्ञापन आया । यूपीएससी से रक्षा मंत्रालय में साइंटिस्ट 'बी'के 12 पदों के लिए विज्ञापन जारी हुआ था । उसने ध्यान से पूरे विज्ञापन को दो-तीन बार पढ़ा । वह समस्त शैक्षणिक योग्यताएं, आयु सीमा आदि पूरी करता था । पहले लिखित परीक्षा बाद में साक्षात्कार होना था । उसने आवेदन कर दिया । आवेदन को यूपीएससी में भेजने में जब रुलाऊ साहब ने अड़ंगा लगाने की कोशिश की यानि फाइल को अपनी कुर्सी के पीछे वाले रैक में रख दिया तो वह प्रबंध निदेशक की शरण में चला गया । एमडी साहब से मिलने के बाद उसे पता चला कि वे तो बड़े भले व्यक्ति है, दयालू हैं, सज्जन है। बात को ध्यान से सुनते हैं, वरना उप्रेती ने तो उनके बारे में ऐसी-ऐसी बातें उपक्रम में फैला रखी थी कि कोई उनके कमरे में जाने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाता था । प्रबंध निदेशक ने पहली बार उप्रेती की बात नहीं मानी और अजय जी जान से परीक्षा की तैयारियों में जुट गया । उसे एक महीने की छुट्टी भी आसानी से मिल गई ।

एक दिन वीरसिंह घर पर आया तो वह परीक्षा की तैयारियों में व्यस्त था । वीरसिंह यह बताने आया था कि उप्रेती साहब का प्रमोशन पर तबादला दिल्ली हो गया है और वे जल्दी ही अपना नया पदभार ग्रहण करने के लिए रवाना होने वाले हैं और उन्होंने आपको मिलने के लिए बुलाया है । इस खबर से उसे जहां बेहद खुशी हुई वहीं आश्चर्य भी हुआ लेकिन उसने इस बात को अधिक तूल नहीं दिया और अपनी परीक्षा की तैयारियों में व्यस्त हो गया । उसने ठान लिया था कि वह उप्रेती से मिलने ऑफिस नहीं जाएगा । हो सकता है यह उसकी कोई नई चाल हो, जिससे उसका ध्यान भंग हो जाए और वह पढ़ाई न कर पाए ।

एक महीना उसने न दिन को दिन समझा और न ही रात को रात । न खाने पीने की सुध-बुध और न ही आराम की चिंता । शेविंग करने और नहाने-धोने में लगने वाला वक्त भी उसे अखरने लगा, लिहाजा उसमें भी कतर-ब्यौंत होने लगी ।उसकी मेहनत रंग लाई........ रोजगार समाचार में लिखित परीक्षा का परिणाम प्रकाशित होने के पहले ही उसके दिल्ली गृह मंत्रालय के स्टेनो मित्र खोब्रागड़े ने उसे सूचित कर दिया था कि वह लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया है, लेकिन उसने तब तक किसी को भी यह बात नहीं बताई थी जब तक कि रोजगार समाचार का वह अंक उसके हाथ में नहीं आ गया, जिसमें लिखित परीक्षा का परिणाम छपा था । उसने और वीरसिंह ने बार-बार रोल नंबर का मिलान किया, जब पूरी तरह से संतुष्टि हो गई, तब वह प्रबंध निदेशक को सूचित करने के लिए चल पड़ा । प्रबंध निदेशक अपने कक्ष में अकेले थे, जब वह अंदर पहुंचा तो वे सोच-विचार की मुद्रा में शून्य में निहार रहे थे । उसने बिना कुछ कहे नमस्कार की मुद्रा में दोनों हाथों को जोड़कर सीने से सटा लिया और धीरे से उनके सामने अपनी लिखित परीक्षा का प्रवेश पत्र और रोजगार समाचार का वह पृष्ठ, जिस पर परीक्षा परिणाम छपा था, रख दिया । उसके रोल नंबर को वीरसिंह ने फ्लोरेसेंट हरे रंग से हाईलाइट कर दिया था । प्रबंध निदेशक ने पहले प्रवेश पत्र देखा फिर परिणाम वाला पेज........नजरें उठाकर उसकी ओर देखा......एक बार और पुष्टि कर ली । उनकी भावमुद्रा अचानक बदल गई । चेहरे पर मुस्कान आ गई –

''अजय ! यू आर जीनियस, कांग्रेट्स ---। ''

''सर, बहुत धन्यवाद । लेकिन अभी तो इंटरव्यू बाकी है । ''वह अचानक आई खुशी को झेल नहीं पा रहा था ।

''मेहनत करो । कोशिश करो । मुझे लगता है तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी ।'' प्रबंध निदेशक की वाणी में विश्वास था ।

''ठीक है सर, मैं पूरा प्रयास करूंगा । बस, आपका आशीर्वाद बना रहे ।''कहकर वह बाहर निकल आया ।

अब वह साक्षात्कार की तैयारियों में जुट गया । कदम-कदम पर उसे परामर्श मिलने लगे । कोई कहता आईएएस की कोचिंग ज्वॉइन कर लो । वे लोग इंटरव्यू की तैयारी बढ़िया ढंग से करवाते हैं । कोई कहता इंटरव्यू में जाने से पहले पार्लर जाना न भूलना, कोई कहता डाइटिंग शुरू करो, पेट निकल रहा है, कोई कहता दाढ़ी बढ़ा लो, फ्रेंचकट रखो । जितने लोग उतनी सलाहें । अब वह उपक्रम का हीरो बन गया था । उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह उसके लिखित परीक्षा पास करने का परिणाम है या रुलाऊ साहब के जाने का । आखिर वह दिन भी आ गया, जिसका उसको ब्रेसब्री से इंतजार था । उसे इंटरव्यू में सफलता मिल गई है, यह इंटरव्यू समाप्त होते ही उसे महसूस हो गया था । चार-छह महीने बाद उसे भारत के राष्ट्रपति की ओर से नियुक्ति पत्र भी प्राप्त हो गया । मेडिकल एवं अन्य औपचारिकताओं के लिए उसे दिल्ली जाना था । आर्मी के रिसर्च एवं रेफरल हास्पिटल में उसका मेडिकल हुआ और उसे पुणे की एक डिफेन्स प्रयोगशाला में साइंटिस्ट 'बी'के रूप में नियुक्ति मिल गई।

उसका घर नागपुर में होने के कारण वह साल में एक-दो बार नागपुर चला जाता था......... वीरसिंह उससे मुलाकात करने के लिए घर पर आया करता था । फिर वीरसिंह से फोन पर भी बातें होती रहती थी । समाचार मिलते रहते थे । जब वह एक दीवाली पर घर आया तो वीरसिंह ने बताया कि उप्रेती साहब दिल्ली से तबादले पर वड़ोदरा आ गए हैं, लेकिन एक दुखद घटना हुई है, उनका बेटा अनेक बार प्रयास करने के बाद भी इंजीनियरी के अंतिम वर्ष की परीक्षा पास नहीं कर पाया तो होस्टल के कमरे में पंखे से लटक गया । उसके मुंह से तुरंत 'ओह'निकल गया लेकिन मन के किसी कोने से राहत का स्वर भी सुनाई दिया हालांकि यह कोई राहत की बात नहीं थी । उप्रेती की पत्नी को केंद्रीय सरकारी अधिकारी होने के कारण अपने पति के साथ उसी नगर में पोस्टिंग मिल जाती थी, जहां पति की पोस्टिंग होती थी । समय पंख लगाकर उड़ता रहा । उसका प्रमोशन होता रहा, तबादला होता रहा........ लेकिन विदर्भ की मिट्टी की गंध उसे समय पाते ही नागपुर खींच लाती थी ।

एक दिन वीरसिंह का फोन आया कि बेटे के गम में उप्रेती साहब की पत्नी ने अपना मानसिक संतुलन खो दिया है। काफी इलाज कराने के बाद भी मैडम ठीक नहीं हो पा रही है....... घर पर रखना उचित एवं संभव न होने के कारण पागलखाने में भर्ती करा दिया गया है । उप्रेती की खबरें उपक्रम में पहुंचा करती थी। मां के न रहने पर जब वह नागपुर गया तो एक महीने की छुट्टी पर था । वीरसिंह ने बताया कि अब उप्रेती साहब उपक्रम के प्रबंध निदेशक बनकर यही नागपुर आ गए हैं । आपको याद होगा कि उनकी एक बेटी थी.......जब वे पिछली पोस्टिंग पर मुंबई में थे तो उनकी बेटी ने मोबाइल रिपेयर करने वाले विजातीय लड़के के साथ घर से भागकर शादी कर ली । अब उप्रेती साहब इस दुनिया में बिलकुल अकेले रह गए हैं । लेकिन अब उनका डंडा पहले से भी अधिक चलता है........अब वे लोगों को रूलाने का अवसर ही तलाश करते रहते हैं । उसे विश्वास हो गया कि उसके मुंह में बत्तीस दांत नहीं है, गिनने में गलती हो गई थी ।

**उप महाप्रबंधक (राजभाषा)**
**मध्य रेल, मुंबई छशिमट**

## पहला कदम

**नीलम चंद्रा**

जब मैंने पहला क़दम रखा
ज़िंदगी के उस नए रास्ते की सीढ़ी पर,
एहसास-ए-डर बसा हुआ था
दिल-ओ-जिगर के हर कोने पर!

सीढ़ी हिल रही थी,
उस पर लगी कीलें पाँव में चुभ रही थीं,
मैं भी साबित-क़दम नहीं थी,
और मेरी धड़कन थर-थर कांप रही थीं!

तभी मेरी नज़र गयी सीढ़ी पर!
अरे, यह तो कितनी छोटी सी थी!
मुझे तो फ़लक तक पहुँचना था,
मेरी परवाज़ तो आसमान तक होनी थी!

कैसे ले जाती यह सीढ़ी मुझे
मेरे मकसद के करीब?
मुझे यह सीढ़ी देने वाला
कोई रफ़ीक़ था या रक़ीब?

बस मेरे मन ने कहा, चल दो!
जो भी होगा, देखा जाएगा!
चलोगी नहीं जब तक इस पर,
अब्र भला कैसे साफ़ हो पायेगा?

मैं जैसे-जैसे चढ़ती गयी
नीला आसमान नज़र आने लगा था!
शायद वो आफ़ताब ही मुझे
बेमतलब का आज़मा रहा था!

किसी परिंदे ने पंख उधार दिए
और बस, मैं फ़िर उड़ने लगी!
अपने ख़्वाबों की धड़कन से
मस्ताती हुई, मैं फ़िर जुड़ने लगी!

सीढ़ी मुझे समझा गयी थी,
पहला क़दम लेना ज़रूरी है!
फिर तो मक़सद तक पहुँचाना
यह तो क़ुदरत की भी मजबूरी है!

**मुख्य बिजली इंजीनियर**
**छशिमट मुंबई**

# ताई

**विपिन पवार**

जीवन के तपते मरुथल में

शीतल बयार सी तुम आई................................. ताई।

साँसों की डोर जब लगी टूटने

जोड़ने भागकर तुम आई.................................. ताई।

कांधे पर सूरज को लेकर

तुमने पार की है अंधेरी खाई............................ ताई।

अपनों ने दिल चीर दिया

आँसू पीकर तुम  मुस्कराई....................... ताई।

संबंधों के खाली सन्नाटे के बीच

नेह की उष्मा लेकर तुम आई.......................... ताई।

डूबते सूरज को निहारता रहा मैं

भोर की पहली किरण सी तुम आई................ ताई।

धूप की गर्म उंगलियों के निशान

मैंने देखे हैं तुम्हारे चेहरे पर........................... ताई।

इसलिए कुछ राहत देने आया हूं

मुझे अपने आंचल में छिपा लो..................... ताई।

**उप महाप्रबंधक (राजभाषा)**
**मध्य रेल, मुंबई छशिमट**

**मेरे मामा”**

**मनीष एस. बापट**

मेरे मामा मेरा गांव..
सारी ट्रेनें गुजर जाती थी वहां
कुछ ही तो रुकती थी जहां..
वो उनका बैलगाड़ी लेकर अग्रिम इंतजार करना।
और हमारा उन पर का अटूट विश्वास वहां।।

ट्रेन से उतरते ही देख उनके चेहरे की वो मुस्कान..
सारा सामान उठाकर थाम लेना हमारा हाथ।
फिर शुरु होता था बातों का सिलसिला..
स्टेशन और कस्बे से गुजरती बैलगाड़ी जहां।।

एक बड़ा सा था नाला..
उसे पार कर लहलहाते खेतों के उस पार..
था हमारा ननिहाल वहां।।

एक प्यार-सा गांव..
जिसमें प्रवेश करते ही था बजरंगबली का मंदिर।
और आगे बढ़तेबढ़ते पहुंच जाते थे ननिहाल..
राह देखते पाते थे हम नानानानी मामियों मौसियोंऔर बच्चों को जहां।।

रहते थे हम वहां कुछ दिन और..
लाड़-प्यार, आम, संतरे, केले के बगीचे सुनहरे रंग से लहलहाते खेत..
बीच से गुजरती नहर..
और कुएं के पम्प हाऊस पर नहाना।
याद है हमें वो जमाना।।

फिर कुछ दिनों के बाद वापसी का होता था सिलसिला।
अब दूसरे मामा होते थे बैलगाड़ी के सारथी जहां।।
उसी आत्मीयता के साथ उनका वो हमें ट्रेन में बिठाना।
गांवों की ऐसी आत्मीयता अब देखने मिलती कहां।।

**मुख्य बिजली इंजीनियर (रोलिंग स्टॉक)**
**मध्य रेल, मुंबई छशिमट**

## शताब्दी वर्ष

**राजेश कनोजे**

सफलता के शिखर पर हमारा उत्कर्ष,
स्वास्थ्य केंद्र इगतपुरी ने किए पूरे सौ वर्ष ।।

निरंतर प्रगति एवं उन्नत विचार-धारा,
श्रेष्ठता का शिखर ही लक्ष्य हमारा ।
स्वास्थ्य, सुरक्षा, उच्चतम श्रेष्ठ जीवन भी,
मुस्कुराते अधिकारी, कर्मचारी एवं परिवार सभी ।

सागर की लहरों से हिमालय का स्पर्श,
स्वास्थ्य केंद्र इगतपुरी ने किए पूरे सौ वर्ष ।।

सुरक्षित परिवहन और आधुनिक प्रणाली,
विकास के क्षेत्र में हमारा इतिहास गौरवशाली ।
पर्यावरण मित्र बन रखते हरियाली,
सुंदर सौम्य वृक्ष ढेरों खुशहाली ।

हर्षित हर मन का समर्पण सहर्ष,
स्वास्थ्य केंद्र इगतपुरी ने किए पूरे सौ वर्ष ।।

निरंतर प्रगति का है हमें विश्वास,
प्रतिष्ठा, पुरस्कार, पहचान हमारे पास ।
विपश्यना ध्यान केंद्र संग हरी भरी वादियां,
ट्रिंगलवाड़ी फोर्ट, कैमल वैली ट्रेकिंग सबसे बढ़िया ।

कुल मिलाकर मुंबई मंडल की शान - यही निष्कर्ष,
स्वास्थ्य केंद्र इगतपुरी ने किए पूरे सौ वर्ष ।।

स्वास्थ्य केंद्र इगतपुरी को आज यह अनोखा उपहार,
श्री रजनीश के हाथों श्री रजनीश का हो रहा सत्कार ।
हमारे प्रधान मुख्य चिकित्सा निदेशक श्री वाय. एस. अटारिया,
सी. एम. एस. सर की परिकल्पना से कार्यक्रम साकार हुआ ।

100 से 200 वर्षों की ओर बढ़ते नित प्रति वर्ष,
स्वास्थ्य केंद्र इगतपुरी ने किए पूरे सौ वर्ष ।।

**मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक, परेल**
**मध्य रेल**

## यह न भूलें कि हिंदी हमारे रोजगार की भाषा भी है।

**देवेन्द्र सोनी**

हिंदी हमारी मातृभाषा तो है ही। यह विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा भी है। इसीलिए हिंदी को विश्व के अन्य देशों में भी अपनाया जाता है।

राजभाषा, सम्पर्क भाषा और जन भाषा बनने के बाद अब हमारी हिंदी विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हिंदी के ज्यादातर शब्द संस्कृत, अरबी और फारसी भाषा से लिए गए हैं इसीलिये वह हमारी राष्ट्रीय चेतना की संवाहक भी है।

विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या अंग्रेजी भाषियों की तुलना में कहीं अधिक है। यह अधिकतर मध्यम वर्ग की लोकप्रिय और प्रयुक्त भाषा होने के कारण बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भी इसे अपनाया और अपने उत्पादनों के प्रचार-प्रसार के लिये भी इसे ही चुना। यही नहीं, आज टीवी चैनलों एवं मनोरंजन की दुनिया में हिंदी सबसे अधिक लाभ की भाषा है। एक अनुमान के मुताबिक कुल विज्ञापनों की 75% भागीदारी भी हिंदी भाषा से ही है। इसी आय से आज देश में करोड़ों बेरोजगारों को विभिन्न क्षेत्र में रोजगार मिल रहा है। अनेक हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में हिंदी के जानकारों को रोजगार के अवसर सुलभ हुए हैं । इसलिए यह न भूलें कि हिंदी अब रोजगार की भाषा भी है । यह दायरा बढ़ता ही जा रहा है। आंकड़ें बताते हैं कि पिछले दशकों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी का विकास बहुत तेजी से हुआ है। जिसके प्रभाव स्वरूप वेब, विज्ञापन, संगीत, सिनेमा और बाजार के क्षेत्र में हिंदी ने अपनी पकड़ मजबूत की है। यही नहीं विश्व भर में लगभग 200 से अधिक विश्वविद्यालयों में शोध के स्तर तक अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की गई है। सबसे ज्यादा प्रसन्नता की बात हमारे लिए यह है कि विदेशों से सैकड़ों पत्र-पत्रिकाएं भी हिंदी भाषा से नियमित रूप से निकल रहे हैं। जिसका एक प्रमुख कारण मुझे यह भी लगता है कि हिंदी भाषा और इसमें निहित भारत की सांस्कृतिक धरोहर इतनी सुदृढ़ और समृद्ध है कि इस ओर अधिक प्रयत्न न किये जाने के बावजूद भी हिंदी के विकास की गति बहुत तेज है। कोई भी क्षेत्र हो भारतीय संगीत, ध्यान, योग, विज्ञान आयुर्वेद, हस्तकला, भोजन और भारतीय परिधानों की बढ़ती मांग तथा आकर्षण के कारण, इनके केंद्र पूरे विश्व में अपनी धाक जमाते नजर आते हैं। जिसके कारण आज हिंदी ने अन्य भाषाओं को पीछे छोड़ा है और अपना वर्चस्व बनाया है। करोड़ों हिंदी भाषी आज कम्प्यूटर और मोबाईल पर हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं, जो एक बड़ी उपलब्धि है। जबसे हिंदी इंटरफेस का और यूनिकोड का प्रचलन हुआ है देश भर में लाखों युवाओं ने इसे अपने रोजगार का साधन बनाया है। आज जगह-जगह कम्प्यूटर और मोबाइल पर हिंदी में रोजगार मूलक कार्य होते देखे जा सकते हैं। यह रोजगार के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि है। जिसे नकारा नहीं जा सकता। अनुवाद के क्षेत्र में भी हिंदी भाषा ने रोजगार के अवसर सुलभ कराए हैं। न्यायालयीन फैसलों का या अन्य अंग्रेजी आदेशों का हम हिंदी में अनुवाद कराते हैं, जो अंततः किसी न किसी को रोजगार उपलब्ध कराता ही है।

बावजूद इसके आज हिंदी भाषा अपना मूल स्वरूप खोते नजर आ रही है, जिससे उसके बौद्धिक स्तर में आ रही निरन्तर गिरावट चिंता का विषय बनता जा रहा है। इसका एक बड़ा कारण अशुद्ध प्रयोग और युवा पीढ़ी तथा हमारे द्वारा भी अपनी सुविधा के लिए गढ़े जाने वाले वे शब्द हैं जो एक नई अधकचरी भाषा को जन्म दे रहे हैं। यही सर्वाधिक चिंता का विषय है जिससे बचना बहुत जरूरी है। फिर भी, मेरी नजर में हिंदी का भविष्य और उससे मिलता रोजगर पूरी तरह से सुरक्षित है। यह जन-जन के मन की भाषा है। इसे और अधिक बेहतर तथा मूल रूप में प्रयुक्त किया जाना ही हम सबकी जवाबदारी है। जिस दिन से हम हिंदी के प्रति अपने दायित्व को गंभीरता से लेने लगेंगे तो फिर उसे कोई भी राष्ट्रभाषा बनने से नहीं रोक सकता। इन सब कारणों को देखते हुए आने वाले समय में हिंदी और उससे जुड़े रोजगार की बहुलता होगी, यह मेरा विश्वास है पर इसके लिए हम सबको ज्यादा सजग रहना होगा।

**प्रधान संपादक**
**युवा प्रवर्तक डॉट कॉम, इटारसी**

## तेरी वो मुस्कुराहट

**अमरजीत कुमार**

तेरी वो मुस्कुराहट,
वो मीठी सी शरारत,
कब बन गई मेरी आदत,
मुझे पता न चला !

तेरी वो चंचलता,
शबनम-सी शीतलता,
कब भायी मेरे मन को,
मुझे पता न चला!

वो तेरी झील-सी आँखें,
और मुझे छेड़ती निगाहें,
वो तेरा लटों को सुलझाना,
और मुझे देख मुस्काना,
कब घर कर गई मेरे मन में,
मुझे पता न चला!

वो तेरा मेरे सपनों में आना,
फिर मुझे सताना,
मुझसे वो तेरा लड़ना,
फिर रूठना-मनाना,
कब छू गई मेरे मन को
मुझे पता न चला!

वो तेरा शरमाना,
फिर धीरे से मुस्काना,
प्यार से इठलाना,
फिर बहुत सी बातें बनाना,
कब बस गई मेरे मन में
मुझे पता न चला!

तेरी वो मुस्कुराहट,
वो मीठी-सी शरारत,
कब बन गई मेरी आदत,
मुझे पता न चला !
मुझे पता न चला !........

**फोटोग्राफर**
**जनसंपर्क कार्यालय, छशिमट**

## पतंग की तरह होना चाहती है मेरी जिदंगी

**कृतिकार्थ तिवारी 'कृतार्थ'**

पतंग की तरह होना चाहती है मेरी जिदंगी

कुछ देर उड़ना, कुछ देर सभंलना

बादलों के घेरे में दूर तक टहलना

नीचे धरती जहाँ खुशहाल नज़र आए

हवाएँ जहाँ भीड़ से मुझे दूर ले जाए

उड़ान ऐसी कि पहाड़, नदियाँ सब घूम आऊँ

इरादे इतने मजबतू कि सारा अंबर घूम आऊँ

फासला कुछ समय का, बिछड़ना होगा अपनों से

पर चाह में रिश्तों की, मैं सारा शीर्ष गगन चूम आऊँ,

तुम आना, बनना मेरी एहसासों की एक मजबूत डोर

रहना मेरे साथ जब निश्छलता से घूमूं मैं चारों ओर

राह की कठिनाइयाँ जब तलक मुझे रोकेगी,

ऊचाँइयों तक पहुँचाने में तुम तब लगाना थोड़ा और ज़ोर

डगमगा कर जब भी हताशा मुझ पर हावी हो

ढील देना ऐसी कि बस ये हवाएं ही मेरी साथी हो

अंत मुझे जब मेरे पास आते दिखेगा

तुम रहोगी वो चेहरा जो मुझे हमेशा याद रहेगा

जाति समाज धर्म से दूर होकर तुम बनना मेरी बदंगी

क्योंकि पतंग की तरह होना चाहती है मेरी जिदंगी।

**अधिवक्ता, उच्च न्यायालय**

**इंदौर**

# क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव – 2023 की झलकियां

नाट्योत्सव के दौरान दर्शकों को संबोधित करते हुए श्री नरेश लालवानी, महाप्रबंधक मध्य रेल

नाट्योत्सव के दौरान कलाकोरों को प्रोत्साहित एवं दर्शकों का उत्साह वर्धन करते हुए सुश्री रेणू शर्मा, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी

नाट्योत्सव कार्यक्रम की सफलता पर संबोधन देते हुए श्री विपिन पवार, उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

महाप्रबंधक, मध्य रेल को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी

प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी स्मृति चिह्न भेंट करते हुए  उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

मध्य रेल महिला कल्याण संगठन के अध्यक्ष को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय)

## क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव – 2023 की झलकियां

सर्वश्रेष्ठ प्रथम पुरस्कार प्राप्त नाटक सिकंदर और कौआ, पुणे मंडल की झलकियां

सर्वश्रेष्ठ प्रथम पुरस्कार प्राप्त नाटक सिकंदर और कौआ, पुणे मंडल की झलकियां

सर्वश्रेष्ठ प्रथम पुरस्कार प्राप्त नाटक सिकंदर और कौआ, पुणे मंडल के कलाकार मंच पर एक साथ

सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए पुणे मंडल के नाटक **सिकंदर और कौआ** के लिए विनिश सक्सेना व पर्णिमा जायसवाल को पुरस्कृत किया गया

सर्वश्रेष्ठ संगीत के लिए पुणे मंडल के नाटक **सिकंदर और कौआ** के लिए पर्णिमा जायसवाल को पुरस्कृत किया गया

# क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव – 2023 की झलकियां

सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए  माटुंगा कारखाना के नाटक **चफी** के लिए  कुणाल गायकवाड़ को पुरस्कृत किया गया

महाप्रबंधक के कर-कमलों से नाटक की निर्णायक श्रीमती रेखा चौधरी, सुप्रसिद्ध रेडियो जॉकी, मंच संचालक व डबिंग आर्टिस्ट को श्रीफल और शॉल भेंट किया गया

महाप्रबंधक के कर-कमलों से नाटक के निर्णायक श्री नंदकुमार शंकर सावंत, सुप्रसिद्ध रंगमंच कर्मी, निर्देशक तथा लेखक  को श्रीफल और शॉल भेंट किया गया

महाप्रबंधक के कर-कमलों से नाटक के निर्णायक श्री हरवंश सिंह बिष्ट, सुप्रसिद्ध रंगमंच कर्मी, अभिनेता व निर्देशक  को श्रीफल और शॉल भेंट किया गया

नाटक मंचन का आनंद उठाते हुए निर्णायकगण, मध्य रेल महिला कल्याण संगठन के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं अन्य दर्शक

नाटक मंचन का आनंद उठाते हुए महाप्रबंधक, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी, निर्णायकगण एवं मध्य रेल महिला कल्याण संगठन के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष अन्य दर्शक

## क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव – 2023 की झलकियां

सर्वश्रेष्ठ प्रथम नाटक के लिए पुणे मंडल के नाटक **सिकंदर और कौआ** को पुरस्कृत किया गया

नागपुर मंडल के नाटक **वेटिंग रूम** को तृतीय प्रेरणा पुरस्कार दिया गया

सर्वश्रेष्ठ ध्वनि प्रभाव व प्रकाश परिकल्पना के लिए मुख्यालय के नाटक **दरिया के उस पार** को पुरस्कृत किया गया

सर्वश्रेष्ठ तृतीय नाटक के लिए माटुंगा कारखाना के नाटक **चफी** को पुरस्कृत किया गया

सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए परेल कारखाना के नाटक **कारगिल** की कलाकार स्मिता जाधव को पुरस्कृत किया गया

सर्वश्रेष्ठ द्वितीय नाटक के लिए मुख्यालय के नाटक **दरिया के उस पार** को पुरस्कृत किया गया

# बड़ा दिन

**- विनोद कुशवाहा**

रेस्टोरेंट की सीढ़ियां चढ़ते हुए जैसे ही नीचे की तरफ नजर गई तो पाया कि कोई देख रहा था। वही खुले बाल , वही रूप , वही रंग , वैसा ही सूट , वैसा ही ड्रेस सेंस । अंतर था तो केवल धूप के चश्मे का क्योंकि तुम तो कभी धूप का चश्मा लगाती नहीं थीं । उधर वह उस एक पल में ही मेरी बेचैनी समझ गई । उसने अगले ही पल चश्मा उतार लिया । चश्मा क्या उतारा मुझे असमंजस की स्थिति से उबार लिया । मैं हतप्रभ रह गया । तो ये कोई और था । काश कि वह ऐसा न करती । रहने देती कुछ समय । ... क्योंकि उस एक पल ने ही कितनी ही विस्मृत यादों को ताजा कर दिया । वह तारीख भी मैं कभी नहीं भूलता । 24 दिसम्बर । यानि बड़े दिन के एक दिन पहले । ... पर मेरे लिये तो आज का ही दिन बड़ा दिन था । किसी को याद करने का दिन । किसी को याद रखने का दिन ।

ओह । तो ये हैं वो मोहतरमा । क्या याद दिला दिया । कभी सोचा भी न था कि ये चेहरा मेरे दिन का चैन और रातों की नींद हराम कर देगा । कभी सोचा न था कि इस कदर इस चेहरे की गिरफ्त में आ जाऊंगा । अब आलम ये है कि न तो दिल को कोई सुकून है न ही दिल को कोई करार है । काश कोई हकीम होता जो इस दर्द का इलाज कर देता, पर नहीं क्योंकि दर्द भी आप हैं और दवा भी आप ही हैं । अब अफसोस होता है कि कुदरत ने कितनी बार मुझे मौका दिया और मैंने उसे यूं ही गंवा दिया। वरना आज ये चेहरा मेरे इतने करीब होता कि मैं न केवल उसे देख पाता बल्कि महसूस भी कर रहा होता । उस दिन आपको देखने के बाद जब मैं आपके पीछे रेस्टोरेंट की सीढ़ियां चढ़ रहा था तो ऐसा लग रहा था कि सारी खूबसूरती, सारी कशिश , सारी कायनात आप में सिमट गई है । गजब का आकर्षण है । उस एक लम्हे को याद करता हूं तो लगता है कि सिर्फ इस एक लम्हे पर ही सारी ज़िंदगी कुर्बान की जा सकती है । क्यों कर रही हो मेरे साथ ऐसा ?। क्यों मुझे ऐसी डोर से बांध लिया है कि अब छूटना मुश्किल होगा । क्यूं अपनी तरफ खींच रही हैं ? क्यूं हर पल आपकी उपस्थिति का अहसास बना रहता है ? क्यूं मेरे आसपास बनी रहती हैं ? क्यूं आपको पाने की नाकाम कोशिश कर रहा हूं ? क्यूं इस मृगतृष्णा के पीछे दौड़ रहा हूं ? जबकि आपको सामने बिठाकर न जी भर के देख सकता हूं । न बातें कर सकता हूं । दिन का उजाला तो छोड़िये अंधेरा भी मुझे नसीब नहीं । मगर ये क्या मांग रहा हूं मैं ? जबकि अब तो मैंने मिलने की भी उम्मीद छोड़ दी है । नहीं मिल पाऊंगा । अब कभी नहीं मिल पाऊंगा। ... लेकिन मैं आपसे मिला भी । ... और अंततः वह दिन भी आ गया जब वेदना ने मेरे जीवन में प्रवेश किया ।

आज वेदना ठान कर बैठी थी कि किसी तरह मेरे दिल का गुबार बाहर निकाल कर रहेगी ।

इधर मैं भी बोलने का मन बना चुका था । मैंने बोलना शुरू किया - ' बहुत सी इच्छाएं अतृप्त रह गईं वेदना । कितना कुछ सीखने की इच्छा मन में थी । '

' अरे मैं सब आपको सिखा सकती हूं । उसके लिए इतना टेंशन लेने की जरूरत क्या है । ' वेदना बोल पड़ी ।

मुझे एकबार भी विश्वास नहीं हुआ, मगर मुझको वेदना पर अपने से ज्यादा विश्वास था । इसलिये मानना पड़ा ।

'...लेकिन वेदना जितना समय आपने मुझे अपने से दूर रखा, मेरा वह समय तो आप लौटा नहीं पाओगी और इसके लिये मैं कभी आपको माफ नहीं करूंगा । ' मैं पुरानी बातें याद करके अब उखड़ रहा था ।

' ओफ्फो । आपके मूड का भी भरोसा नहीं । कभी भी कुछ भी सोच लेते हैं और वैसा ही रिएक्ट करने लगते हैं । '

' नहीं वेदना । मैं अंदर कुछ नहीं रखता । आपसे भी पहले मेरे जीवन में कोई आया था । ' मैंने डरते -डरते कहा ।

' ...तो ? तो क्या हुआ ? अब तो नहीं है न । '

' नहीं । अब नहीं है । जानती हो ? वो जो बोलती थी अक्सर सच हो जाता था । जब भी बोलती थी , बुरा ही बोलती थी । '

' ओह । थैंक गॉड । उससे आपका पीछा तो छूटा । सच बताना विकल । मुझसे तो कोई शिकायत नहीं न । ' वेदना के स्वर में चिंता थी ।

' है न ? आपने अब तक शादी क्यों नहीं की ? '

' अरे बाबा । अब ये कैसा सवाल है । ' वेदना ने सर थाम लिया ।

' नहीं । मुझे इस सवाल का जवाब चाहिए । अभी । इसी वक्त । '

' विकल ये बिल्कुल निजी प्रश्न है पर मेरे और आपके बीच में कुछ भी तो निजी नहीं रह गया है । हालांकि मैं इसका उत्तर देना जरूरी नहीं समझती । फिर भी आप सुनना चाहते हैं तो सुनिए । शादी नहीं करो तो सिर्फ एक ही दुख रहता है और अगर कर लो तो सौ दुख साथ में जुड़ जाते हैं । ' वेदना गंभीर थी ।

' तो क्या मुझसे शादी करने के बाद आपको दुख मिलने की उम्मीद है ? '

' नहीं । आप हर बात अपने ऊपर क्यों ले लेते हैं ? ऐसा होता तो मैं आपसे जुड़ती ही क्यों ? फिर अभी मेरा इस तरह का कोई इरादा नहीं है । सच बताना विकल आपको कहीं ये तो नहीं लगता कि आप गलत जगह आ गए हैं । ' वेदना का चेहरा सुर्ख हो गया था ।

' नहीं वेदना। माँ के बाद सबसे ज्यादा परवाह आप ही ने तो की है । कितनी चिंता करती हैं आप मेरी । कितनी फिक्रमंद रहती हैं आप मेरे प्रति । ' कहते हुए मैंने लाड़ से वेदना की गोद में अपना सर छिपा लिया ।

दूर सूरज ढल रहा था । छत पर फिर भी हल्की तेज धूप थी । वेदना ने अपनी गुलाबी साड़ी के आँचल से मेरा सर ढक लिया । मुझे माँ याद आ गई ।

हम दोनों नीचे उतर रहे थे । सीढ़ियों से । कमरे में जाने के लिये । घर में जाने के लिये ।

' ऐसा तो कभी नहीं हुआ पर अब हो रहा है । ज़िंदगी से निराश नहीं । अवसाद भी नहीं । फिर भी रोज की दिनचर्या क्यों बोझ लगने लगी है ? क्यों पहले जैसा सब कुछ नहीं रहा ? नौकरी से छुटकारा पाने की इतनी बड़ी सजा ? कोई भी मौसम क्यों न हो मैं तड़के ही उठ जाता था । उठ कर तैयार होना । फिर वही स्टेशन, वही प्लेटफार्म, वही ट्रेन, रोज साथ आने-जाने वाले वही हंसते-खिलखिलाते चेहरे, वही छोटा-सा कस्बा, वही नापसंद नौकरी । कैसी भी नौकरी थी लेकिन मन तो लगा रहता था । काश कि वे दिन लौट आते । अब हाथ आये हैं तो सिर्फ सूने दिन । लंबी रातें । आज आईने में बहुत दिनों बाद अपना चेहरा देखा तो नफरत-सी होने लगी है इस चेहरे से, क्योंकि यह वही चेहरा तो है जो कुछ लोगों को पसन्द नहीं था । क्या मेरा चेहरा सचमुच इतना बुरा है वेदना ? क्या मैं सच में इतना बुरा हूं ? अंदर से आवाज भी आती है -" हां हूं तो "। स्वभावगत् बुराईयां चेहरे पर कहां छिपती हैं । जितनी भी खामियां हैं, कमियां हैं, कमजोरियां हैं सब चेहरे पर आ ही जाती हैं । आंखें भी नहीं छिपा पातीं उन्हें । सामान्य-सी मुस्कुराहट भी कुटिल बन जाती है । तो ऐसे में मैं क्या करुं ? बताओ न वेदना।

है कोई रास्ता ? नहीं न ? अब तो शेष रह गई है प्रतीक्षा । अनन्त यात्रा पर जाने की । हो सके तो मुझे माफ कर देना । ' कहते-कहते मेरी आंखें भर आईं ।

इधर वेदना मौन थी । अंततः मेरे पीछे खड़ी वेदना सामने आ कर उसके पैरों के पास बैठ गई । उसने मेरे हाथ अपने हाथों में ले लिए । कभी न छोड़ने के लिए । दोनों के बीच कोई संवाद नहीं था । ... परन्तु कहीं न कहीं भावनाओं का एक सेतु तो था ही जिसने दोनों को जोड़ रखा था । कमरे में गहरा सन्नाटा व्याप्त था । बाहर तेज बारिश हो रही थी । एक तूफान बाहर था तो एक तूफान मेरे अंदर चल रहा था । अचानक जोर से बिजली कड़की । मैं सिहर उठा । वेदना ने मेरा सर अपने सीने में छिपा लिया । तूफान थम गया । बारिश की रफ्तार भी कम हो गई । मैं वेदना के दिल की धड़कन स्पष्ट सुन पा रहा था । मेरी आँखों में थमी नदी बह निकली ।

वह इतना बुरा तो नहीं था ।

" वेदना ... " मेरी सांसों से एक आह निकली ।

' ...हूं । बोलिये । ' वेदना ने भी एक लंबी सांस लेते हुए मेरी नम आंखों में झांकने का प्रयास किया ।

' क्या आप पुनर्जन्म में विश्वास करती हैं ? ' दुख से पार पाने की कोशिश करते हुए मैंने प्रश्न किया ।

' ...हां । जितना भी जानती हूं उतना पुनर्जन्म पर विश्वास करने के लिए काफी है और आप ये फालतू की बातों की तरफ ध्यान मत दिया करिये । ' वेदना ने मेरे बालों को सहलाते हुए जवाब दिया ।

' ...मैं सच कह रहा हूं वेदना । मैं पुनर्जन्म चाहूंगा । कोई मिले न मिले इस प्रकृति से फिर मिलना चाहता हूं । बार-बार मिलना चाहूंगा । ' मेरे स्वर में भावुकता थी ।

' ...अच्छा । तो अब की बार कहां जन्म लेंगे साहब । बनारस ? ' वेदना मुस्कुराई ।

' नहीं । ' मैंने दृढ़ता से उत्तर दिया ।

' तो फिर कहां ? ' वेदना ने मुझसे आंखों ही आंखों में प्रश्न किया ।

"... कोलकाता ..." मैंने वेदना की गोद से आजाद होते हुए जवाब दिया ।

' ...सुनो । ' वेदना ने मेरे हाथ इस तरह फिर थाम लिए कि कहीं कुछ छूट न जाए ।

'... बोलिये । ' मैंने अपने दोनों हाथों से वेदना के चेहरे को थाम रखा था ।

'बोलिए न ।' मैंने अपना कथन दोहराया ।

'... फिर तो मैं भी पुनर्जन्म चाहूंगी । साथ ही ये भी चाहूंगी कि मेरा भी अगला जन्म " कोलकाता " में ही हो । यूं आपको अकेला नहीं छोड़ने वाली । ' वेदना ने मेरे हाथों को अपने हाथों में लेते हुए कहा ।

मैंने वेदना को सहारा देकर उठाया और अपने पास ही बिठा लिया । दोनों चुप थे । दोनों खामोश थे ।

'मतलब आप किसी भी जन्म में पीछा नहीं छोड़ने वालीं । ' मैं मुस्कुराया ।

'नहीं । बिल्कुल नहीं । ' वेदना हर्षातिरेक से भर उठी । मुझको सामान्य होते हुए देखना उसके लिए एक सपने का पूरा हो जाने जैसा था ।

'...ओह । ' मैं गहन संतोष का अनुभव कर रहा था ।

'आप बैठिए । मैं आपके लिए कॉफी बना कर लाती हूं । ... और हां अपने मोबाईल को साइलेंट मत रखा करिये । मुझे चिंता हो जाती है । आपको क्या ? आप तो कभी कॉल बैक करते नहीं । नंबर तो वही है न आपका ? 'वेदना उठते हुए बोली ।

'...जी । वही है । मेरे दुख के अलावा जीवन में कुछ भी तो नहीं बदला । सब वैसा ही है । मैं ऐसे ही दुख के योग्य हूं वेदना क्योंकि मैंने जाने-अनजाने सभी को तो दुख पहुंचाया है । इसीलिए वही दुख तो लौटकर बार-बार मेरे पास आता है । आखिर क्यों उससे बचने का प्रयास कर रहा हूं ? लेकिन सच कहूं तो अब हिम्मत टूट रही है यार । ' हालांकि मैं अवसाद से उबरने की पूरी कोशिश कर रहा था ।

इधर मौसम भी साफ हो गया था । मैं जब घर आया था तब चारों तरफ तूफान से घिरा हुआ था । मन भी अशांत था । ... पर अब सब कुछ सामान्य था । यह था वेदना की उपस्थिति का असर । उसकी उपस्थिति मात्र मेरे दुखों पर भारी पड़ती थी । ऐसे में मुझे सामान्य होने में भी देर नहीं लगती। आज भी तो ऐसा ही कुछ हुआ था ।

जीवन से मन उचाट हो गया है । दिनचर्या बोझ लगने लगी है । न कुछ कहने का मन होता है न कुछ सुनने का ।

वैसे एक तरह से जिम्मेदारियों से मुक्त हो चुका हूं । लिखने-पढ़ने से भी मुक्त हुआ जा रहा हूं। बस कुछ ऋण ऐसे हैं जिनसे मैं मुक्त नहीं हो सकता ।

जिनका कभी दिल दुखाया वे मुझे माफ करें । जो कारण-अकारण नाराज हैं वे भी मुझे क्षमा करें । क्षमा इसलिये करें क्योंकि उन्हें मनाने, उनके पास तक पहुंचने का मेरे पास अब समय नहीं रह गया है । " कहते हुए मैं वेदना के सामने एक अपराधी की तरह बैठ गया ।

दुख तो मैंने वेदना को भी पहुंचाया था । अपराधी तो मैं उसका भी था । बावजूद इसके वेदना हमेशा यही कहती रही - 'हर बार माफ़ ही तो करती आई हूं । इस बार भी माफ़ कर दूंगी ।'

... पर उसके रुख को देखते हुए लगता नहीं था कि वह अब की बार मुझे माफ़ कर देगी ।

वेदना मौन थी । मैं भी खामोश था । अंदर तूफान उठ रहा था । बाहर सन्नाटा पसरा हुआ था ।

**एलआईजी / 85, प्रियदर्शिनी कॉलोनी,**
**इटारसी (म.प्र)**

## आलो-अंधारी

**राजश्री बिराजदार**

पुस्तक का परिचय, लेखिका- बेबी हालदार

यह किताब, जो एक नौकरानी की आत्मकथा है, मैने हाल ही में पढ़ी। कहना होगा कि थोड़ी देर हुई पढने मे, क्योंकि किताब 2008 में प्रकाशित हुई थी। मूल बंगाली लेखन का हिंदी में अनुवाद प्रबोध कुमार ने किया है। हिंदी से मराठी में अनुवाद मृणालिनी गडकरी ने किया है। अचानक हाथ लगी इस असाधारण किताब की कहानी हर किसी को पता होनी चाहिये इसलिए यह लेखन करने का प्रयास किया है।

आलो का अर्थ है प्रकाश और अंधारी का अर्थ है अंधकार...अर्थात् प्रकाश और अंधकार का मिश्रण। इस आत्मकथा को लिखते समय, बेबी हालदार पैंतीस वर्ष की रही होगी। पढ़ना शुरू करने से पहले ही ऐसा लगा कि उसके पास इतने छोटे से जीवनकाल में कहने के लिए क्या होगा ? हम उत्सुकता से पढ़ना शुरू करते हैं और हैरान हो जाते हैं,चकित हो जाते है। बेबी ने हर तरह के संघर्षों का सामना किया, उनको सहजता से स्वीकार किया है और उतनी ही सहजता से लिखा है। ये सब हमारे जैसे सुखासीन लोगों को प्रेरणा निश्चितरुप से प्रेरणा देता है। बेबी के पिता सेना में नौकरी करते थे। उसका जन्म जम्मू-कश्मीर के एक गांव में हुआ था जहां उसके पिता काम करते थे।

सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद, वह पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में बस गए। बेबी की एक बड़ी बहन, दो भाई थे। बेबी के पिता कभी भी घर के खर्च के लिए पर्याप्त पैसे नहीं देना चाहते हैं। इस वजह से माता-पिता में लगातार लड़ाई होती रहती थी और बच्चे दुखी रहते थे। ऐसे में कैसे शिक्षा प्राप्त करें? हालांकि, बेबी की मां ने किसी तरह अपने बच्चों को स्कूल भेजा। बेबी को शिक्षा में रुची थी। उसकी गति भी अच्छी थी। इतिहास, भाषा उसके पसंदीदा विषय थे लेकिन बेबी को अपनी शिक्षा बीच में ही छोड़नी पड़ी क्योंकि उसकी माँ अपने पति के अत्याचार से तंग आकर सबसे छोटे बेटे को लेकर घर छोड़कर चली गई । माँ के चले जाने से बाकी तीन बच्चों की स्थिति प्रभावित हुई।

पिता ने दूसरी शादी कर ली। सौतेली माँ के पिछली शादी से बच्चे थे। फिर घर में हंगामा मच गया। बेबी की बड़ी बहन की शादी जल्दबाजी में तय की गई और करवा दी गयी, फिर बेबी की शादी की चर्चा होने लगी। उनकी सौतेली माँ की साजिश के कारण उनके पिता ने भी बिना किसी पूछताछ के उनकी शादी तेरह साल की उम्र में उनसे दोगुने उम्र के व्यक्ति से कर दी। बेबी, जो सातवीं कक्षा में थी और उसे पढ़ाई का शौक था, किसी की पत्नी बनने के लिए ससुराल चली गयी और उसकी बुरी किस्मत शुरू हो गई।

पति, व्यसनी, निर्दयी, आलसी था। गंदगीपसंद था। एक छोटी सी झुग्गी में वो दोनों रहने लगे। घर में कोई बुजुर्ग आदमी भी नहीं था।

अनजाने में बेबी चौदह साल की उम्र में गर्भवती हो गई। पति ने केवल उस पर मातृत्व थोपा। उसने बेबी की कोई देखभाल नहीं की जो कम उम्र में गर्भवती हो गई थी। मैहर गांव में था लेकिन न के बराबर। सौतेली मां, उनके झगडे यही सब वहां चलता था, फिर भी छोटी मोटी मदद उनसे मिलती थी। उनकी मदद से, वह अपना गुज़ारा करने में कामयाब रही। उसको पहला बेटा हुआ। तीन साल बाद, एक और बेटा हुआ और जल्द ही एक बेटी हुई। बीस साल की उम्र में, बेबी तीन बच्चों की माँ बन गई। इन सात या आठ वर्षों में बेबी को अपने पति से बहुत कष्ट सहना पड़ा। उसके जीवन में हमेशा पेट भरने की चिंता रहती थी। उसके पति के माता-पिता एक सुदूर गाँव में रहते थे। उसे समय-समय पर वहाँ जाना पड़ता था। उसके मिलनसार स्वभाव के कारण वहां उसकी प्रशंसा की जाती थी। उसे वहां रहना बहुत पसंद था लेकिन उसके पति ने उसे वहां अधिक समय तक रहने की कभी अनुमति नहीं दी।

बेबी ने नौकरानी के रूप में काम करना शुरू कर दिया क्योंकि वह घर के खर्चों के लिए पर्याप्त भुगतान नहीं कर पा रही थी लेकिन उसके पती को यह पसंद नहीं था। संदेह, दुर्व्यवहार रोजमर्रा का हो गया। बच्चों को ठीक से शिक्षा नहीं मिली, बड़ा बेटा गलत रस्ते पे भटकने लगा। उसका एक भाई काम के लिए दुर्गापुर छोड़कर फ़रीदाबाद में बस गया था। आख़िरकार उसने अपने पति को छोड़कर वहाँ जाने का फैसला किया। वह तीन बच्चों के साथ दिल्ली पहुँची। दो भाई और एक सौतेला भाई वहाँ रहते थे लेकिन बेबी के आने से वो नाखुश थे। बेबी अपना बोझ किसी के ऊपर नहीं डालना चाहती थी। उसी दिन से बेबी ने

काम ढूंढ़ना शुरू कर दिया। एक बड़े बंगले में रहने और काम करने के लिए एक कमरा मिल गया। बेबी दो बच्चों के साथ उस बंगले में रहने लगी। इस घर की मालकिन बहुत कठोर स्वभाव की थी। वह बेबी से लगातार काम करवाती थी। चिल्ला-चिल्लाकर बात करती थी। दूसरे नौकर उस घर में टिक नहीं पाते थे लेकिन बेबी के पास रहने के लिए कोई आश्रय नहीं था, इसलिए उसे यह सब कुछ सहना पड़ता था। बेबी की यह हालत देख लोग उसको नौकरी छोड़ने की सलाह देते थे ताकि वह अपने बच्चों की अच्छी परवरिश कर सके तथा उनकी शिक्षा पे ध्यान दे सके। अंततः उसने वह नौकरी छोड़ने का निर्णय लिया। आख़िरकार उसकी किस्मत का दरवाज़ा खुल गया और उसे प्रबोध कुमार के घर पर नौकरी मिल गई। प्रबोध कुमार का परिवार एक सुसंस्कृत परिवार था। घर में बेबी के साथ एक नौकर की बजाय एक इंसान की तरह व्यवहार किया जाता था।

प्रबोध कुमार को सभी लोग तातुश कहकर बुलाते थे। उन्होंने बेबी से भी यही कहकर पुकारने को कहा। वह उसे बेटी की तरह प्यार करते थे। उनके घर में किताबों का भंडार था। एक बार धूल झाड़ते समय उन्होंने बेबी को किताबें छानते हुए देखा। उन्होंने उससे पूछा कि कितनी पढ़ी-लिखी हो ? उसकी शिक्षा के प्रति लगन, साहित्य में उसकी रुचि देखकर वो प्रसन्न हो गये। यह देखकर कि बेबी को पढ़ने और शिक्षा की इच्छा थी, उन्होंने उसे पढ़ने के लिए कुछ किताबें दीं। इतना ही नहीं, उसे एक डायरी और एक पेन दिया और जितना संभव हो सके अपनी यादों को लिखने के लिए कहा।

इस तरह बेबी ने उसकी यादों को लिखना शुरू कर दिया। लिखने के बाद वह कागज तातुश याने प्रबोध कुमार को दिखाती थी। प्रबोध कुमार उन कागजों को अपने साहित्यिक मित्रों को भेजते थे। उन्होंने और उनके दोस्तों ने बेबी के लेखन की प्रतिभा और स्पष्टता को भी देखा। उनके मित्रो ने बेबी को विशेष पत्र भी लिखे और उसे प्रोत्साहित किया। बेबी ने वरिष्ठ बांग्ला लेखिका आशापूर्णादेवी के उदाहरण का अनुसरण किया। बेबी ने अपनी आत्मकथा दिनभर घर के काम करके और रात में जागकर पूरी की। बाद में उसका हिंदी में अनुवाद प्रबोध कुमार ने किया और बेबी की आत्मकथा प्रकाशित हुई।

इस पुस्तक का कई भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद किया गया है। फ्रैंकफर्ट के पुस्तक मेले में सलमान रश्दी, महाश्वेता देवी के साथ-साथ बेबी को भी सम्मानित किया गया था। बेबी के लेखन की सरल, सीधी, प्रवाहपूर्ण शैली मराठी लेखिका लक्ष्मीबाई तिलक के संस्मरणों की याद दिलाती है। साहित्यिक समझ, काव्यात्म वर्णन उनके लेखन की विशेषताएँ हैं। वह दुःख और पीड़ा से अवगत है लेकिन इसके बारे में कड़वाहट महसूस नहीं करती है। उसको जीवन के प्रति आस्था है पर आसक्ति नहीं। वह लोगों पर दोषारोप नहीं करती बल्कि उन्हें उनकी जगह पर ठीक समझती है इसलिए वह अपने साथ दुर्व्यवहार करने वालों को भी बुरे शब्द नहीं कहती। उनको क्षमा भरी नजरों से देखती है। वह दिल से शुद्ध और ईमानदार है।

इस लेखन में बेबी के जीवन में आए कई लोगों के प्रोफाइल हैं। उन्होंने उन्हें जीवंतता से चित्रित किया है लेकिन इस किताब के मशहूर होने की वजह सिर्फ उसकी शैली नहीं है, बल्कि उसने अनजाने में ही एक वर्ग, एक समय का सामाजिक दस्तावेज लेखन के जरिए पेश किया है, वह ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह समाज में निम्न वर्ग के श्रमिकों के जीवन की एक प्रातिनिधिक कहानी है। यह इसकी भी कहानी है कि इन लोगों के साथ उच्च वर्ग द्वारा कैसा व्यवहार किया जाता है जिनके लिए वे काम करते हैं। यह एक ऐसी कहानी है जो हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति को दर्शाती है। यह एक ऐसी कहानी है जो बताती है कि गरीबी के कारण समाज किस हद तक शिक्षा से वंचित है और इसके कारण सामाजिक और आर्थिक अंतर बढ़ता जा रहा है। संक्षेप में, यह है वर्ग संघर्ष की कहानी जो हमारे समाज में गुप्त रूप से मौजूद है।

प्रबोध कुमार जैसे मानवीय व्यवहार और बड़े दिल वाले लोग दुर्लभ हैं। प्रबोध कुमार की भी उतनी ही तारीफ करनी होगी, जितनी बेबी की, उन्होंने कोयले की खदान में छिपे इस हीरे को ढूंढ निकाला, और सबके सामने पेश किया। हमें भी बेबी की इस आत्मकथा को पढ़कर अंतर्मुख होने की जरूरत है। शायद हमारे घर में हमें भी कोई बेबी मिल जाए।

**मुख्य भेषज्ञ**
**रेल अस्पताल, दौंड. सोलापुर मंडल**

## मनुज को देव बना दे.....

**धर्मेंद्र शर्मा**

कलाम, गांधी नहीं तो सरल मनुज ही बना दे,

जीवन के संग्राम की राह दिखा दे...

भटक रहा ये मानव यूं पथ पर,

इसके भीतर ही देव दर्शन करा दे.....।

संकुचन में सिमटी ये मृद काया,

आत्म केंद्र में उलझा ये नर बेचारा,

इसे नर से नारायण की यात्रा का पथ सिखला दे...

इसमें मनुज देवता का उदय करा दे.....।

व्यष्टि से समव्यष्टि का बोध करा दे,

स्थूल का सूक्ष्म की महत्ता सिखला दे,

सुप्त पड़ी ये मानव काया, इसमें बिजली का प्रवाह करा दे...

इसे लौकिकता का दर्शन करा दे.....।

इस मनुज को देव बना दे, मनुज को देव बना दे.....।

**शिक्षक, अनएकेडमी**

**वाराणसी**

## जिज्ञासा और आकर्षण के केंद्र नर्मदापुरम के आदमगढ़ की पहाड़ी के शैल चित्र

**आहना शंकर दुबे**

आदमगढ़ की पहाड़ी के शैल चित्र हमेशा से जिज्ञासा और आकर्षण का केंद्र रहे हैं। यह पहाड़ी देश की मुख्य दिल्ली-मुंबई रेल लाइन पर मध्यप्रदेश के नर्मदापुरम (होशंगाबाद) रेलवे-स्टेशन से लगभग चार-पांच किमी की दूरी पर स्थित है। कहते हैं कि कभी नर्मदा का प्रवाह पथ इसी पहाड़ी के किनारे से था। यहाँ बता दें कि नर्मदा अमरकंटक के ऊँचे मेकल पर्वत से निकलती है। यह विंध्याचल-सतपुड़ा पर्वतों के बीच बहती हुई नर्मदापुरम पहुँचती है। समय के साथ चार-पांच किमी अपने प्रवाह पथ से धीरे-धीरे खिसकती है। नर्मदापुरम में कालांतर में भौगोलिक परिवर्तनों के कारण नर्मदा प्रवाह पथ से करीब छह किमी दूर खिसक गई है।

### ■ आदमगढ़ के शैलचित्रों की खोज-

यूं तो आदमगढ़ की पहाड़ी के शैलाश्रयों की जानकारी लोगों को तब ही से, जब पहले-पहल मानव ने निर्मित किया था। फिर भी आदमगढ़ के शैलचित्रों सहित पूरे विश्व में इन चित्रों को कब-कब खोजा गया यह जानना भी दिलचस्प है। यूरोप में शैलचित्रों की खोज वर्ष 1879 में उत्तरी स्पेनी में अल्तामिरा की गुफाओं में हुई। यह पांच वर्षीय बालिका ने देखी। वह खेलते-खेलते अचानक उस स्थान तक पहुँच गई थी। उसने अपने पिता को बताया। यही से शैलचित्रों की खोज का सिलसिला आरंभ होने का दावा किया जाता है। बुई नामक व्यक्ति ने 'कोर हन्ड्रेड सेन्चुरी ऑफ आर्ट' नामक ग्रन्थ में अल्तीमारा के साथ 32 अन्य चित्रमय गुफाओं का जिक्र किया है। मिर्जापुर के पास कैमूर की पहाड़ियों पर बने शैलचित्रों की सूचना वर्ष 1880 में काकबर्न तथा कार्लाइल ने अपने शोध में अलग-अलग दी थी। कार्लाइल के शोध की जानकारी 'प्रोसिडिंग्स ऑफ सोसाइटी ऑफ बंगाल' की सूची में प्रकाशित हुई। साल 1922 में पं. हीरानन्द शास्त्री के अनुरोध पर मनोरंजन घोष ने होशंगाबाद (अब नर्मदापुरम) के शैलचित्रों का अवलोकन किया था । तब ये शैल चित्र सामने आए। देश की आज़ादी के बाद वी.एस. वाकणकर ने अनेक स्थलों के चित्रों की खोज 1956-57 में की थी। 'रॉक शैल्टर्स इन मध्यप्रदेश' शीर्षक के अंतर्गत यह जानकारी दी गई। जगदीश गुप्त की पुस्तक 'भारतीय कला के पदचिन्ह' में खास जानकारियां दी गई। यह 1960 की बात है। 1962 में वी. एस. वाकणकर का लेख 'पेन्टेड रॉक शेल्टर्स इन इंडिया' रोम में प्रकाशित हुआ। 1966 में जगदीश गुप्त की किताब 'प्रागैतिहासिक भारतीय चित्र कला' छपी। नर्मदापुरम जिले में सतपुड़ा के घने और अनमने जंगलों में तो शैलचित्रों की अपूर्व विरासत जहाँ-तहाँ देखने में आई है। अब तक की खोजों में आदमगढ़, लश्करियां खोह, बाजार केव, निम्बू भोज, इमली खोह, माढ़ादेव, बनियाबेरी, ईशान शृंग, मान्टेरोजा, छोटे महादेव, बी. डेम, पचमढ़ी, जम्बूद्वीप, खटखटा पुतली लेन, चिल्ड्रेन केव, काईटस क्रेग, रजत प्रपात, मैसी केव, रजत प्रभात, से लेकर डोराथी डीप तक न जाने कितने ही अनखोजे स्थल हैं। उल्लेखनीय है कि 1958-59 में कौंसिल ऑफ साइन्टिफिक एंड इंडस्ट्रीयल रिसर्च नई दिल्ली की ओर से ए. खत्री ने नर्मदा घाटी का सर्वेक्षण किया। श्री खत्री ने पिपरिया के आसपास अवलोकन किया। 1960-61 में उन्होंने आदमगढ़ की पहाड़ियों के माइक्रोलिथ खोजे।

आदमगढ़ के शैलचित्रों के काल निर्धारण को लेकर विद्वानों में मत भिन्नता हैं। क्षुप्रवादी इन्हें प्रस्तर युग के आदिम मानव द्वारा चित्रित मानते हैं । वे अपनी धारणा को पाषाण शस्त्रों के आधार पर पुख्ता करते हैं। कुछ विद्वान इस बात से इनकार करते हैं कि ये शैलचित्र प्राग्वैदिक युगीन हैं। हालांकि

नर्मदा का वेद में उल्लेख नहीं है। अगस्त्य ऋषि जब दक्षिण की यात्रा पर गए तब उन्होंने सूर्य का रास्ता रोककर खड़े विंध्याचल को तो उनके सम्मान में शरणागत स्थिति में ही लेटे रहने का आशीर्वाद दिया। कभी वे लौटे नहीं। जब से वह लेटा हुआ है। वे यहां से गुजरे तो उन्होंने नर्मदा के सौंदर्य का ही दर्शन नहीं किया तब बाकी हिस्से की बात ही नहीं की जा सकती। वाल्मीकि की रामायण से नर्मदा का उल्लेख मिलता है। महाभारत में भी नर्मदा की चर्चा है। स्कंद पहला व्यक्ति था, जिसने नर्मदा के सौंदर्य को आत्मसात किया। स्कंद पुराण में एक खंड नर्मदा का है। नर्मदापुरम में जन्में जीवाश्म-वैज्ञानिक अरुण सोनकिया ने हथनौरा गांव के अभिनूंतनीय कछारी जमाव से आदिमानव के कपाल का जीवाश्म खोजा। भारतीय उपमहाद्वीप में आदि-मानव के कपाल के जीवाश्म की यह प्रथम और अब तक की आखरी उपलब्धि है। इसे "नर्मदा मानव" नाम दिया गया। इससे सिद्ध होता है, "नर्मदा तट पर मानव सभ्यता और संस्कृति थी। इसी संस्कृति की देन ये शैलचित्र भी रहे होंगे।"

**■ शैल चित्रों का विवरण-**

आदमगढ़ की पहाड़ियों का किसी जमाने में विस्तृत फैलाव रहा होगा। उत्खनन के कारण यहाँ बहुत छोटी सी पहाड़ी ही अस्तित्व में है। आदि मानव के गढ़ के कारण इसे आदमगढ़ के नाम से लोग पहचानने लगे। यह नाम अभी कुछ सदियों में ही अस्तित्व में आया। सदियों तक लोग इन्हें देखते समझते आए होंगे। यहाँ वर्तमान में अनेक शैलाश्रय हैं। आदमगढ़ के शैलचित्रों के संरक्षण की जिम्मेदारी केन्द्र सरकार की है। पहाड़ी के चारों ओर तार की फेंशिंग कर दी गई है। इसका प्रवेश द्वार बनाया गया है। इस द्वार से करीब पचास मीटर की दूरी पर ये शैलाश्रय स्थित हैं। मौसम की मार और लोगों की अनदेखी में अनेक चित्र नष्ट हो गए हैं। कुछ को बहुत मुश्किल से पहचाना जा सकता है।

शैलाश्रय एक के चित्र लाल रंग से बने हुए हैं। क्रमांक दो में काफी कठिनाइयों के बाद चित्र पहचाने जा सके हैं। वृषभ का एक चित्र ही पहचाना जा सका है। इसके लंबे सींग अंकित हैं। पूरे शरीर पर खड़ी धारियां हैं। सीगों की ऊँचाई और आकृति सिंधु घाटी से प्राप्त सीलों पर उकरे गए पशुओं जैसे हैं। तीन में कुछ चित्र पहचान में आते हैं। इनमें दो युद्धरत मानव जैसे दिखाई देते हैं। यह चित्र डॉ. जगदीश गुप्त ने पहली बार प्रकाशित कराया था। यह चित्र अतिप्राचीन प्रतीत होता है। एक अन्य चित्र हाथी और उस पर बैठे महावत का है। हाथी पर तीन और सवारी हैं। इसे मेजर गार्डन ने उजागर किया था।

**■ यक्षी का चित्रण-**

शैलाश्रय चार में यक्षी गतिमान शैली में चित्रित है। डॉ. जगदीश गुप्त इसे वन देवी मानते हैं। इसका जिक्र उन्होंने अपनी पुस्तक 'प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला" में किया है। वनदेवी क्यों माना है, इसका उत्तर इस चित्र में ऊपरी हिस्से में फूल-पत्तों के गुच्छों, वनस्पतियों और पहाड़ियों के चित्रांकन में तलाशा गया है। यह यक्ष का चित्र हो सकता है। वैदिक, उत्तर वैदिक, बौद्ध एवं गुप्तकाल तक खलिहानों में या अन्यत्र विपुल संपन्नता, अच्छी फसल या समृद्धि की अधिष्ठात्री के रूप में यक्षी की प्रतिमा स्थापित करने की परंपरा थी। कुछ चित्रों में फसल काटने के भी दृश्य हैं। दो योद्धाओं का युद्धरत चित्र प्रमुख है। यह अंकन सरल रेखाओं से निर्मित है। एक विशालकाय मोर का चित्र लाल रंग से बना है। तीन नर्तकों को गोलाकार पकड़ के साथ नाचते हुए अंकन किया गया है। अन्य पशुओं में शेर, घोड़े और वानर आदि का अंकन है। पांच के चित्र लाल और गेरुए रंग से बने हैं। छह के चित्रों में लाल और गेरुए रंग के साथ नारंगी रंग का प्रयोग किया गया है। इसमें हिरण का चित्र प्रमुख है। दौड़ते मनुष्य के हाथ में धनुष-बाण हैं। दो समूहों के बीच युद्ध में स्त्रियों को भी दिखाया गया है।

शैलाश्रय सात में विचित्र पशु का अंकन है जिसे पहचानना बहुत मुश्किल है। यह चित्र लाल ज्यामितिक रेखाओं से बनाया गया है। इस पशु का शरीर आयताकार है। सफेद रंग से गाय का चित्र भी बनाया गया है। आठ में मानव आकृति में अच्छी केश राशि है। यह किसी स्त्री का चित्र लगता है। तीन मानवों की आकृतियों को नाचते हुए दिखाया गया है। इसमें दो मृदंगवादक आवेग युक्त सहवादन की मुद्रा में हैं। नौ का चित्र दौड़ते योद्धा का है। पैरों के रेखांकन से तीव्र गति का आभास होता है। उसके एक हाथ में कांटेदार ढाल और दूसरे में तलवार है। कमर में म्यान बंधी है। योद्धाओं के अलावा नर्तकों, घुड़सवार है। शैलाश्रय की छत पर सांभर का चित्र बना है ।

**■ क्या नर्मदापुरम जिले में जिराफ थे?**

क्या कभी जिले में जिराफ होते थे? शैलाश्रय दस में जिराफ का अंकन इसी बात को पुष्ट करता है। जिले के दो और स्थानों पर जिराफ के चित्र होने से इसकी पुष्टि होती है। हालांकि विद्वान इससे सहमत नहीं हैं। मानव ने इसे देखा ही होगा तब ही उसका अंकन किया गया है। समीपस्थ बैतूल जिले के घुनिकाफ नामक शैलाश्रय में भी जिराफ के समान चित्र का अंकन है। हजारों साल पहले नर्मदा तट पर जिराफ पाए जाते थे। मध्य युग में ये जिराफ बहुत ही कम संख्या में बच पाए थे। शैलाश्रय दस के चित्रों में शस्त्रधारी अश्व, शूकर (सूअर), महिष, तेन्दुआ आदि का अंकन है। इनमें एक जिराफ जैसा दिखता है। कुछ विद्वान इसे हिरण मानते है। इसकी गर्दन लंबी कर दी गई है। डॉ. जगदीश गुप्त मानते हैं कि नर्मदा के इलाके में जिराफ की कल्पना नहीं की जा सकती। जबकि मेजर गार्डन मानते हैं। कि आठवी-सातवीं शताब्दी में कोई शक्तिशाली राजा हुआ हो, जिसने यह जिराफ अफ्रीका से मंगा लिया हो। दो अन्य स्थानों चितरीकीतरी (बोरी) और शेरनाला (सतपुड़ा) में भी जिराफ के चित्र मिले हैं। कत्थई रंग से महिष का चित्र भी है। यह महामहिषी का चित्र है।

शैलाश्रय ग्यारह में धनुर्धर एक घोड़े पर बाण छोड़कर हमला करता दिखाई दे रहा है। बारह में अधिकांश चित्र नष्ट हो गए हैं। तेरह में कुछ चित्र पहचान में आए हैं। चौदह में भी अधिकांश चित्र नष्ट हो गए हैं। पन्द्रह और सोलह में तो एक ही चित्र को पहचाना जा सका है। सोलह में वृक्ष की पूजा को संदर्भ बनाया गया है। सत्रह में लाल रंग से परिवार का दृश्य है। इसमें दो बच्चे दिखाए गए हैं जो अपने पिता के साथ हाथ पकड़कर कहीं जाते हुए दिखते हैं। यह स्वाभाविक चित्र है। गेरुए रंग से हाथ के छापों का चित्रांकन भी है। इस शैलाश्रय के पीछे भी चित्रों का अंकन है। इसमें नंबर नहीं डाला गया है। इसमें भी विचित्र प्राणी को दिखाया गया है। एक और विचित्र प्राणी का अंकन शैलाश्रय अठारह में भी है। इन्हें कत्थई रंग से बनाया गया है।

आदमगढ़ की पहाड़ी में पूरे भारतीय सांस्कृतिक-सामाजिक जीवन लोक के दर्शन हो जाते हैं। इसमें आदि मानव ने बहुत खूबी से स्वयं को कहा है। इसे हमने अपने-अपने ढंग से देखा है। प्रमाणित करने की कोशिश हुई। लेकिन भारतीय संस्कृति में प्रमाण की नहीं भाव और विश्वास की महत्ता हैं । इसी भाव में लोक (जनसामान्य) की सत्यता छिपी है।

■ संदर्भ सूची :


1. मसीह पूर्णिमा, 1996, मध्यप्रदेश की प्रागैतिहासिकचित्रकला, प्रकाशित, अध्याय पांच पृष्ठ 327, 344, 346, 351, 354-55 |
2. प्रसाद धर्मेन्द्र, नर्मदापुर के पुरावशेष, अध्याय-03 पृष्ठ संख्या- 26, 27, 28, 29, 30 और 31 ।



**एम.ए. (हिंदी शोधार्थी)**
**(पीएचडी प्रथम वर्ष अध्ययनरत)**

**मन जलता है**

**संकल्प वर्मा**

इस बात को देखकर
मेरा मन जलता है

पैसों के लिए इंसान
अपनों से भी लड़ता है

अमीर और अमीर होने को
गरीब गरीबी में मरता है

भारत का एक हिस्सा है
जो काले साये में दबता है

देख के भी अंजान है
सब से मुंह छुपाए रखता है

आदमी अपने मुंह पे
एक मुखौटा लगाए रखता है

इस बात को देखकर
मेरा मन जलता है

**आशुलिपिक (अंग्रेजी)**

**प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर कार्यालय**

**मुख्यालय, मध्य रेल, मुंबई छशिमट**

## एक था अर्जुन

**श्रीमती स्वर्णलता छेनिया**

उज्जैन हाईवे से लगा हुआ एक छोटा-सा कस्बा था जिसका नाम था "चंदननगर", जहां पर सभी प्रकार के लोग मिलजुल कर रहा करते थे। छोटी-बड़ी पहाड़ियों से घिरा चंदननगर प्राकृतिक नजारों से भरपूर था। सबसे खूबसूरत होती थी चंदन नगर की सुबह और शाम। जब उन पहाड़ियों से सूरज निकलता तो पूरी पहाड़ियां सोने से चमक उठती और चमक उठता पूरा चंदननगर। हर ओर खुला वातावरण, घरों की बसाहट दूर- दूर होने से हर घर में एक आंगन था। सुबह की सुनहरी धूप और आंगन को और भी सुनहरा कर देती और ऐसी ही खूबसूरत हुआ करती थी चन्दननगर की शाम। सुनहरा रंग आसमान में छोड़कर डूबता सूरज और उस गोधूलि बेला में घर लौटती गाय। उनके गले में बंधी घंटियां और उनके पैरों के टापों की आवाज दोनों मिलकर एक एहसास जगाते जैसे चंदननगर दे रहा हो सूरज को संगीतमय विदाई।

इसी चंदननगर में रहता था "अर्जुन"। अर्जुन  एक कम पढ़ा लिखा मगर हमेशा कुछ सीखने की लालसा लिए एक गौर वर्ण ,सजीला नवयुवक लगभग 6 फीट ऊंचाई, जिसके बाल काले मगर घुंघराले थे। मध्यम आकार की काली-काली आंखें जो हमेशा कुछ खोजती रहती।अर्जुन अपनी मां के साथ रहता था, पुराने तालाब के पास "शिवकुटी" में।

चंदननगर में "शिवकुटी" बरसों पुराना एक शिव मंदिर था जो कि सबसे ऊंचा था। मंदिर के आसपास और भी छोटे-छोटे चबूतरे थे जिनमें सभी देवी देवता विराजमान थे। पास की एक छोटी बावड़ी भी थी, जिसमें पानी अभी भी था, पर शायद कोई उसे उपयोग में नहीं लाता था। पास ही बना था पत्थरों से निर्मित एक चकोर तालाब, जिसमें सीढ़ियां भी थी, जिसे चोपड़ा कहते हैं। कुछ आस-पास के लोग यहां कपड़े धोने आया करते थे। पूरा मंदिर, पीपल नेम, आम महुआ पेड़ और मेहंदी की झाड़ियों से घिरा था। कुटी में शिव मंदिर दूर से ही नजर आने लगता था।

किसी राजा के द्वारा बनवाया गया पुराना मंदिर था जो हमेशा सफेद झक दिखाई देता था। हरे भरे पेड़ों के बीच जब सूरज ढल जाता तो बियाबान जंगल की तरह दिखने लगती थी यह जगह। तब शाम के समय से टिमटिमाते दीपक दिखाई देते थे जो अर्जुन और उसकी मां जलाते थे। इन मंदिरों में बिजली नहीं होने से वे दीपक रात के समय बड़े ही सुंदर लगते। अर्जुन बचपन से ही मां के साथ कुटी में ही रहा करता था। जब से होश संभाला, तब से वह सफेद वस्त्र ही धारण करता था। सफेद छोटा कुर्ता और उसमें कमर में सफेद धोती कुछ परिक्रमा वासियों की तरह। वही सुबह शाम मंदिरों में पूजा

करता, श्लोक पढ़ता, आरती गाता और नियम से शाम को सात बजे दीपक लेकर पूरे गांव में हर दुकान, घर, यहां तक कि अस्पताल और थाने में भी।

सभी श्रद्धा से आरती लेते और कुछ सिक्के उसकी थाली में डाल देते। अर्जुन भी ना जाने कौन से श्लोक बोलते हुए आरती का दीपक पूरे गांव में घुमाता था। इस बीच वह किसी से कुछ ना कहता। ऐसा नहीं कि उसकी जीविका का साधन था यह। कुटी के पास पड़ी कुछ खाली जमीन पर वह और उसकी मां सब्जियां भी उगाते थे जिससे दोनों की जीविका चलती थी और मंदिर का खर्च भी निकलता था। अर्जुन और उसकी मां को मैंने बचपन से ही कुटी में देखा। वह शायद जब यहां ब्याह के आई थी तब से ही यहीं है। कुटी और शिव मंदिर मानो उन्हें विरासत में मिला हो क्योंकि अर्जुन के पिता यहीं पुजारी थे और शायद उसके दादा भी और शायद उनके दादा के पिता भी।

ज्यादा उनके बारे में नहीं जानता, मगर जिस अधिकार से वे वहाँ रहते और मंदिर की देखरेख करते, लगता उन्हीं की संपत्ति हो। अर्जुन जब सवा साल का था तब उसके पिता का देहांत हो गया था। अचानक ही शायद हृदयाघात से, तब अर्जुन की मां ने सभी से विनती कर उस स्थान पर रहने और मंदिर की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेने की बात रखी। जिसे सभी ने अपना सहयोग देते हुए मान लिया था। मां ने किसी तरह समय काटा। अर्जुन छह-सात साल का हुआ तभी से मंदिर की जिम्मेदारियां निभाना सीख गया। भगवान को नहलाना, बावड़ी से पानी लाकर मंदिरों को धोना, उन्हें चंदन-टीका करना, फूल चढ़ाना, आरती गाना, मां के साथ-साथ सब कुछ करने लगा था। यूँ तो वह समय निकालकर स्कूल भी जाता, पर शायद बहुत अधिक मन नहीं लगा पाया। मजबूरियों के चलते किसी तरह मैट्रिक कर पाया, लेकिन मां को अपने बेटे पर नाज था जो कि धार्मिक होने के साथ-साथ व्यसन मुक्त भी था। अर्जुन भी खुश था।

मेरा मेट्रिक कंप्लीट हो गया था और मुझे अपनी पढ़ाई के लिए बाहर जाना पड़ा। कुछ दिनों में जाने वाला था। एक दिन मैं अर्जुन से मिलने उसके घर गया। कुटी के शांत माहौल में बैठकर हमने काफी देर बातें की अर्जुन की बातों में एक अलग ही बात नजर आई। मुझे लगा कि कहीं ना कहीं वह आगे बढ़ना चाह रहा है। कुछ करना चाह रहा है। शायद वह आगे पढ़ना चाह रहा था मेरी तरह। पर उसकी स्थिति परिस्थिति जो कुछ मुझे दिखाई दे रही थी, उसे भी दिख रही थी। मैंने अपनी समझ के अनुसार उसे समझाया। उसने भी बात को वहीं छोड़ दिया। मैं अपनी पढ़ाई के लिए शहर के हॉस्टल में आ गया और दिन बीतते-बीतते साल बीतने लगे। चंदननगर जाता तो अर्जुन से मिलना हो ही जाता था। मैंने उसे हमेशा अपने उसी काम में लगे देखा जो वह बचपन से करता आया था। बस एक नई बात उसने जरूर बताई कि अभी भी वह पढ़ाई जारी रखे हुए हैं। प्राइवेट परीक्षा देकर वह बीए पास हो चुका है। एक दिन उसकी आंखों में एक अलग ही चमक थी। जब उसने मुझे बताया कि वह एमए भी

करना चाह रहा है। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। उससे भी ज्यादा आश्चर्य मुझे उसका कारण जानकर हुआ। चंदननगर का भोला-भाला अर्जुन जो कि मंदिर में पूजा करके अपना सादा जीवन जी रहा था। उसे अचानक ये धुन कहाँ से लग गई। फिर उसने बताया कि टीवी पर जो न्यूज़ एंकर आती है और इंग्लिश में न्यूज़ देकर जाती है, वह उसे बहुत पसंद है और वह उससे शादी करना चाहता है। उसे अपने रंग-रूप ,कदकाठी पर तो पूरा यकीन था लेकिन सिर्फ डिग्री नहीं थी जो उसकी इस प्रेम साधना को भंग कर सकती थी। उसे अपनी इंग्लिश में उसे कमी नजर आई है। इसलिए उसने ठान लिया कि वह इंग्लिश में एमए करके न्यूज़ एंकर से शादी जरूर करेगा। मैंने उसकी बातें सुनी पर ऐसी असंभव सी लगने वाली उसकी मासूमियत भरी हसरत सुनकर हंसी आई, लेकिन उसकी चेहरे की खुशियों भरी रंग देखकर कुछ कहते नहीं बना, खैर मैं चला आया वापस शहर। अब उससे मिलना और कम हो गया। कभी-कभी तो मिल भी नहीं पाता क्योंकि शहर में ही ग्रेजुएशन के बाद नौकरी मिल गई थी।

पीजी करते-करते शादी भी हो गई। सहूलियत के लिए अपने परिवार सहित मैं शहर में ही रहने लगा। चंदननगर जाना कम हो गया। कुछ बरस और बीत गए। सुना था कि अर्जुन ने एमए भी कर लिया। खुशी हुई मेरा तबादला और दूर हो गया। इस तरह लगभग चंदननगर जाना नहीं हो पाया। लगभग 20 वर्ष के बाद किसी विवाह में सम्मिलित होने चंदननगर जाना होगा। चंदननगर जाने वाली बस में बैठते कि मुझे वहां की सुबह शाम और शिवकुटी के टिमटिमाते दिए नजर आने लगे। साथ ही याद आया "अर्जुन" जिसे लगभग में भूल ही चुका था। उसकी याद आते ही एक कल्पना हुई कि किस हालात में होगा अर्जुन? क्या हुआ होगा? उसकी पढ़ाई, शादी सब कुछ दिमाग में सवाल बनकर उठने लगे। मेरी बस चंदननगर पहुंच ही रही थी।

शाम का समय था। पर वही सिंदूरी शाम नहीं थी। गायों की गले में बंधी घंटियां और टापों की आवाज नदारद थी। चूल्हे में से उड़ता हुआ धुआं नही था। घर आंगन अब आंगन नहीं दुकान बन चुके थे। छोटे-छोटे घर, बड़ी-बड़ी इमारत बन चुके थे जिनमें से अब अस्त होता सूरज भी नहीं दिखाई पड़ता। बस उसका सिंदूरी आंचल फैला दिखता। जिस घर में शादी थी, मैं वहां पहुंचकर लोगों से मिलते-जुलते कुछ समय बीत गया। मैंने उनसे बाहर घूमने की बात कही और बाहर निकला। मेरे पैर यंत्रवत कुटी की ओर बढ़ने लगे। दूर से ही दिखाई दिया मुझे शिव मंदिर वैसा ही सफेद पर वहां अब बिजली भी थी, जिसकी वजह से वह बियाबान जंगल नहीं दिख रहा था। सफेद ट्यूबलाइट की रोशनी से जगमगा आ रहा था। अचानक अंधेरे में एक दिया टिमटिमाता दिखा जो मेरी ओर चला आ रहा था। शायद वह किसी के हाथ में था और नजदीक आने पर मैंने अनुमान लगाया कि शायद ही अर्जुन है। हां वही अर्जुन मैंने आवाज दी अर्जुन वह रुका हां अर्जुन ही तो है। मैंने अपना नाम बताया उसे भी मुझे पहचानते देर नहीं लगी। मैंने उसका हाल पूछा, उसने मुस्कुराकर कहा ठीक है। हम चलते-चलते बातें

करने लगे। उसे दिया लेकर पूरे गांव में जाना था। इसलिए हम वापस गांव की ओर बढ़े, रोड पर लाइट आने पर मैंने अर्जुन को देखा तो वह तो नहीं बदला था पर 40 पार उम्र साफ झलक रही थी। उसकी बातों की बालों की सफेदी से, पर मासूमियत वही थी 20 साल वाली। उसने सुबह मिलने की बात कहकर अपनी राह ली और मैं अपने घर आ गया। शादी के शोर-शराबे में भी मैं अर्जुन के बारे में ही सोचता रहा। अर्जुन से मिलने मैं सुबह उसके घर पहुंचा। सुबह की शीतल हवा खुले वातावरण में जब मैं वहां गया तो कोई रौनक, किसी तरह की आवाजाही मुझे नहीं दिखी। अर्जुन दिखा पूजा करते हुए, पूजा खत्म करके जब मैंने उससे मां के बारे में पूछा तो उसने बताया कि मां काफी पहले गुजर चुकी हैं। मैंने कहा, तुम्हारी शादी हो गई? उसने कहा नहीं।

अभी वह उस न्यूज़ एंकर का इंतजार कर रहा है जो न्यूज़ पढ़ा करती थी। उसने यह सोच रखा है कि वह उसी से शादी करेगा। नहीं तो आजीवन अविवाहित रहेगा। इसलिए तो उसने अंग्रेजी में एमए किया था मैं अर्जुन की बात सुनकर कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था क्योंकि वह बिल्कुल आश्वस्त था की न्यूज़ एंकर जरूर उससे शादी करेगी। वह बिल्कुल परफेक्ट पर्सन है उसके लिए और उसे पूरा भरोसा है अपने भगवान पर, जिनकी दिन-रात सेवा किया करता है। मैंने उसका भरोसा बनाए रखा और ईश्वर से निवेदन किया। हाथजोड़ कर चला आया, वापस लौटते समय मेरे सामने था नया चंदननगर और वही पुराना "अर्जुन"।

**अध्यापिका**
**12 बंगला, इटारसी**

**कोई भी जन्म से बुद्धिमान नहीं होता,**
**क्योंकि ज्ञान अपने प्रयासों से ही प्राप्त होता है ।**

**- टी. कृष्णमाचार्य**

**हमारी नागरी लिपि दुनिया की**
**सबसे वैज्ञानिक लिपि है ।**

**- राहुल सांकृत्यायन**

## मेहनत

**सत्येंद्र सिंह**

मेहनत करो, कराओ
मेहनत करके खाओ,
चिंता मुक्त हो जाओ
बच्चों को यही सिखाओ।

कीट पतंगे पक्षी सारे
मेहनत करते अरु गाते,
कभी किसी के  आते न आगे
और किसी का छीन न खाते।

मिट्टी पानी साथ निभाते
निश्छल प्यार हवा का पाते,
जो न मेहनत कर पाते
राह किनारे बैठे रह जाते।

मेहनती ही संसार बसाते
राही बन कर राह बनाते,
मुफ्तखोर यहाँ जी न पाते
मेहनत करते वो तर जाते ।

इसीलिए मेहनत यारो
जीवन का मंत्र है यारो,
आओ मेहनत करें, कराएं
खुशियों को गले लगाएं।

**पूर्व वरिष्ठ राजभाषा  अधिकारी,**
**पुणे मंडल**

## राजभाषा कार्यान्वयन

**धर्मेंद्र प्रसाद तिवारी**

सात दशक पूर्व 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को संविधान में अधिकारिक राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया। हर वर्ष 14 सितम्बर को देश के लोगों को जागरूक करने के लिए तरह-तरह के कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। विशेषकर हिंदी राज्यों में यह दिवस हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है जिससे लोगों को हिंदी भाषा के बारे में, जानकारी के साथ-साथ भाषा के प्रति लगाव उत्पन्न हो और इसका प्रचार-प्रसार हो सके। इसे मूल रूप से पूरी दुनिया में हिंदी भाषा की संस्कृति को बढ़ावा मिले और हिंदी के विस्तार में सहायक हो। हिंदी भाषा के साथ तो प्रारंभ से ही सौतेला व्यवहार किया जा रहा है, हिंदी को राजभाषा घोषित करने से पहले ही बहुत ही विरोध का सामना करना पड़ा। विशेषकर दक्षिण भारतीय राज्यों ने हिंदी भाषा का कड़ा विरोध किया, जो कि शिक्षा नीतियों में भी देखा जा सकता है। इसके अलावा हिंदी के साथ अंग्रेजी भाषा को 15 साल के लिए राजभाषा के रूप में जगह दी गई।

हिंदी को भारत के 12 राज्यों की प्रथम भाषा और 11 राज्यों में द्वितीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। हिंदी भाषा की विशालता का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि हिंदी 18 बोलियों का एक समूह है और इस विशाल समूह वाली भाषा का प्रतिनिधित्व हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ के संबोधन में किया। इससे पता चलता है कि हमारी हिंदी भाषा राष्ट्रीय स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय वैश्विकस्तर तक स्थान प्राप्त कर रही है।

### राजभाषा कार्यान्वयन की चुनौतियाँ

कुछ राज्यों ने अंग्रेजी को आज तक राजभाषा बनाये रखा है। हिंदी भाषा को अन्य भाषाओं से चुनौतियाॅ जैसे कि प्रान्तीय भाषाओं,  अंग्रेजी तथा उर्दू भाषा से भी कड़ी चुनौतियाँ मिल रही है। आज इन भाषाओं में प्रतिस्पर्धा का माहौल है, जिसके कारण वे एक-दूसरे की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से नुकसान पहुंचा रही है। हिंदी भाषा को दूसरी बड़ी चुनौती मीडिया में उत्पन्न- हिंग्लिश भाषा से मिल रही है। मीडिया आज अपने फायदे के लिए हिंग्लिश का प्रचार-प्रसार अधिक कर रहा है। हिंग्लिश ने हिंदी के समक्ष अपनी शुद्धता को बनाये रखने की समस्या उत्पन्न कर वैश्विकरण के दौर में अंग्रेजी भाषा को अधिक बल मिल रहा है। इसी के साथ ही सिनेमा ने हिंदी के समक्ष समस्याएं उत्पन्न की है जैसे सिनेमा में हिंदी के साथ अंग्रेजी के प्रयोग के कारण भाषा में अशुद्धता आयी, कुछ विषयों की पुस्तकों का हिंदी में उपलब्ध न होना, मशीनी अनुवाद इतना पर्याप्त नहीं कि पाठकों की मांग को पूरा कर सके। एक महत्वपूर्ण समस्या यह भी है कि शोध और अनुसंधान के लिए हिंदी में शोध अध्ययन सामग्री उपलब्ध नहीं, जिसके कारण शोधार्थी अंग्रेजी में शोधकार्य करना पसंद करते हैं। विज्ञापन बाज़ार हिंदी के लिए दिन-प्रतिदिन चुनौतियाँ उत्पन्न कर रहा है, जिसके तहत एक वर्ग विशेष को लुभाने के लिए अंग्रेजी में विज्ञापन तथा उत्पादों के नाम भी अंग्रेजी में प्रचारित किया जा रहा है।

**राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ाने के उपाय:-**

हिंदी विश्वविद्यालयों की स्थापना- हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल एवं अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा को स्थापित किया गया है। इस तरह के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय सभी राज्यों में प्रारंभ किये आए। इसके अलावा सरकार को विभिन्न राष्ट्रों के विश्वविद्यालय के साथ अनुबंध किया जाय जिससे विदेशी विश्वविद्यालय/ महाविद्यालय/ विद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना हो सके। शिक्षाविद की भूमिका न केवल हिंदी विभाग अपितु सभी संकायों के शिक्षाविद की भूमिका के मूल्यांकन की जरूरत है। शिक्षाविद, संस्कृतनिष्ठ हिंदी भाषा का प्रयोग करते है; जैसे आम आदमी हिंदी भाषा में अलग-थलग महसूस करता है। हिंदी विभाग को अपनी भूमिका का निर्वहन करने की अत्यन्त जरूरत है। अंग्रेजी भाषा पर निर्भरता कम करके भी हिंदी का विकास किया जा सकता है। आज जापान, चीन इत्यादि राष्ट्र अंग्रेजी ज्ञान के बिना आत्मनिर्भर बन गये। यद्यपि हिंदी के प्रति लोगों के संकीर्ण और संकुचित नजरिये को बदलने की जरूरत है। हिंदी का प्रचार-प्रसार प्रांतीय राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जैसे सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया, डी.बी.सिनेमा, हिंदी में शासकीय और गैर शासकीय कार्यों या संपादन का अनिवार्य रूप से किया जाये। हिंदी भाषा को और अधिक समृद्ध बनाया जाए । अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करके, हिंदी में अनुवाद को बढ़ावा मिले, क्षेत्रीय भाषाओं की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया जाये, साथ ही विदेशी भाषाओं की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद को प्राथमिकता दी जाए।

**निष्कर्ष –**

हिंदी भाषा की चुनौतियों से निपटने के उपाय इसे व्यवहार और बोलचाल की भाषा बनाया जाये, अभिव्यक्ति का माध्यम सुदृढ़ किया जाए। हिंदी भाषा को रोजगार की भाषा बनाया जाए। हिंदी के माध्यम से युवकों को प्रशिक्षण दिया जाये। इसे विज्ञान की भी भाषा बनाया जाएं। हिंदी को राजभाषा घोषित हुए 72 वर्ष हो गये, आज हिंदी भाषा जनसंपर्क की भाषा बन चुकी है परंतु राजनैतिक कारणों से आज भी हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा नहीं बन पायी है। यदि भारत वर्ष को एक विकसित अर्थव्यवस्था बनाना है तो हिंदी को कार्य पद्धति, शिक्षा, ज्ञान, कौशल, व्यापार, मीडिया, बाजार की भाषा बनाना ही होगा। ऐसा किये बिना यह देश न तो संपन्न बन सकता है और न समतामूलक, न महाशक्ति और न ही विकसित अर्थव्यवस्था। हिंदी को राजभाषा घोषित हुए 72 वर्ष हो गए, राजभाषा को राष्ट्रभाषा बनाने से पहले उसे जनभाषा बनाना होगा।

**वरिष्ठ अनुवादक,**
**मध्य रेल मुख्यालय**

।

## अंतिम श्रोता

**श्रीमती स्वर्णलता छेनिया**

मेरी कविताओं का
वह अंतिम श्रोता

जो हमेशा से आखिर में
सुनता है मेरी कविताएं
सब के सुन लेने के बाद
सब की प्रतिक्रिया के बाद

दोटूक शब्दों में देता है
अपनी कीमती प्रतिक्रिया
वह मेरी कविताओं का
अंतिम श्रोता

जिस तक पहुंचने के लिए
एक लंबा सफर तय करती है
मेरी छोटी-छोटी कविताएं

ना जाने कितने विचारों, कितने पड़ावों,
कितने एहसासों के दरिया पार करके

भावों की आद्रता से नम हुई
कटाक्षों के तीरों से घायल हुई

मेरी कविता पहुंचती है
उस आखरी श्रोता तक

और अपनी घायल काया को
सौंप देती है उस अंतिम श्रोता को

उसके दोटूक शब्द भी
प्राण जागृत करते हैं

मेरी उस मरणासन्न कविता में
और मैं नतमस्तक होती हूं
मेरी कविता के

अंतिम श्रोता के समक्ष
भीड़ में बैठे अंतिम पंक्ति
के अंतिम श्रोता के प्रति....

**अध्यापिका**
**12 बंगला, इटारसी**

**अनचाही...!!!**

**ममता राजेश टेंपे**

31दिसंबर...

जुदा हो रहे साल की आखिरी रात..

रोज की तरह उसकी राह देखते-देखते आज भी अदिती परेशान हो रही थी| पर "सद्रक्षणाय खलनिग्रहणाय" सेवा मे लगभग दस साल से पुलिस की वर्दी में खुद को झोंक देने वाला उसका पति चेतन अभी तक घर नही लौटा था| ऐसे में जल्द ही रात के बारह बजने वाले है ये दिखाती हुई सामने दीवार पर लगी घड़ी मानो उसके सब्र का मजाक उड़ा रही थी| तंग आ कर अदिती घर के बरामदे मे आकर फिर से उसकी राह देखने लगी|

बाहर हर तरफ नये साल के स्वागत की तैयारी चल रही थी| रोशनी..आतिशबाज़ी.. डी. जे. पर बज रहे गीत. धूम स्टाईल मे भागती हुई बाईक-कार.. लोगों की हैप्पीन्यूईअरssssssss की आवाजें...रास्ते पर उमड़ी हुई भीड़..ऐसा पूरा नजारा आँखों में कैद करते हुये अदिती फिर से रास्ते की तरफ देखने लगी| गाड़ी के होर्न की आवाज सुनते ही वह उठ खड़ी हो गई और पति को आते देख वह खाना गर्म करने के लिये वह रसोई की तरफ चल पड़ी|

सुबह आठ बजे घर से बाहर निकला हुआ चेतन कई घंटो बाद पसीने से लथ-पथ अपनी खाकी वर्दी उतारकर....थके-हारे और थोड़े तनावपूर्ण चेहरे के साथ, जैसेतैसे फ्रेश होकर, एक छोटे से डायनिंग टेबल पर आंखे मूंदकर बैठा हुआ था| धीरे से खाने की थाली उसके सामने रखते हुये अदिती उसके पास गई| उसके बालों में बड़े प्यार से हाथ फेरते हुए बोली... सुनिये ! थाली लगाई है.. खाना खा लीजिये| कितनी देर यूँही आँखे बंद करके बैठे रहोगे।आज बहुत थकान लग रही आपके चेहरे पर।नाराज भी लग रहे हो।बहुत काम था क्या? जल्दी खाना खाकर लेट जाओ।सिर पर तेल लगा देती हूँ, थोड़ा अच्छा लगेगा| और हाँ, आपको नए साल की हार्दिक शुभकामनायें, ऐसा कहते हुए हाथ मिलाने के लिए अदिती ने अपना हाथ चेतन की ओर बढ़ाया।

कैसा नया साल और कैसी शुभकामना अदिती? आज का दिन तो बहुत ही खराब था| जिंदगी मे आज से पहले इतना ज्यादा गुस्सा, इतनी ज्यादा नफरत शायद ही कभी महसूस की होगी मैंने| और इन सबसे भी ज्यादा भावुक भी करके गया आज का दिन| आज से पहले मैंने खुद को कभी इतना बेचैन महसूस नही किया जितना आज कर रहा हूँ| सच कहूँ, मुझे तो आज खाना खाने का भी मन नही कर रहा है| उठा लो ये थाली अदिती| मै सोना चाहता हूँ कुछ देर आराम से|

सुनिए ! आप ऐसे क्यूँ बोल रहे है? थोड़ा तो कुछ खा लीजिये। काम की वजह से पता नही दिनभर भी आपने कुछ खाया होगा या नहीं?

इतनी जिद मत करो अदिती| जाने दो मुझे| तुम भी मेरा इंतजार करते– करते थक गई होगी ना?तुम खाना खा लो और सो जाओ| इतना कहकर चेतन चला गया|

अदिती ने भी खाना नही खाया| वह चेतन के पास गई और बोली – सुनिये! आज से पहले मैंने आपको इतना परेशान कभी नहीं देखा| कुछ हुआ है तो बताइए| हो सकता है बात करके आपका दिल हल्का हो जाए|

क्या बताऊँ? अदिती, इस दस साल की पुलिस की नौकरी मे मैंने क्या कुछ नहीं देखा? कितने ही मुजरिम देखे है, भीषण दुर्घटनाएं देखी, सड़क पर हुए हादसे देखे, जले– कटे लोग देखे है, खून से

लथपथ और फांसी पर टंगी कई सारी लाशें भी देखी है। ये सब देख-देख के, उन लाशों को उठा-उठा के ऐसा लगता था जैसी भावानाएँ कबकी मर गई थी| दिल-दिमाग पत्थर हो गया था। पर आज ऐसा नहीं हुआ| आज एक अलग ही एहसास हुआ। इन दस सालों में पहली बार एक लाश को छूने से पहले ही हाथ काँप रहे थे| कुछ पल के लिये मानो दिल ने धड़कन ही बंद कर दिया था| बदन पे कांटे आने लगे थे| सिर पे गुस्सा सवार हो गया था और पता नही कब अपनेआप आँखों से आंसू बहने लगे? ये सब बताते हुए अभी भी चेतन रो पड़ा।अदिती ने चेतन का ये रूप पहले कभी नहीं देखा था। उसने चेतन को शांत करते हुए पूछा, "आखिर ऐसा भी क्या हुआ आज?"

चेतन बताने लगा, "आज सुबह रोज की तरह ही मैं थाने गया। आज जहां मेरी ड्युटी लगाई गयी थी,वहां निकलने के पहले ही वायरलेस सेट पर मैसेज आया "थाने से कुछ दूर, सुनसान जगह पर झाड़ियों के बीच वहां के स्थानीय लोगों को कुछ दिखा है ऐसी जानकारी कंट्रोलरूम को मिली है। तुरंत उस जगह जाकर जांच करें।"

उस मैसेज के बाद मेरी ड्युटी इस लगाइ गयी| कुछ सहकर्मियों के साथ मैं स्पॉट पर पहुंचा। वहां बहुत भीड़ थी। भीड़ को हटाते हुए हम आगे गये और देखा तो ...... सफेद कपड़े मे लिपटा एक नवजात शिशु वहां पड़ा हुआ था। पास जाकर मैंने कपड़े पर फैला कचरा साफ किया, कपड़ा हटाया .........काले रेशमी बाल...गुलाबी रंग .. दोनो कानों पर रखे छोटे-छोटे से हाथ ... पेट के पास खिंचे हुये नाजुक से पैर ..... आंखे मींचे शांति से सोया हुआ किसी ने लावारिस की तरह फेंका हुआ एक नवजात शिशु, लड़की थी वह।

दिल और दिमाग में उठी कश्मकश के साथ, खुद को हौसला देते हुये, एक उम्मीद से मैंने उस नन्ही परी के सीने को स्पर्श किया। पर अफसोस ! उसकी धड़कने तो कब की ही बंद हो चुकी थी। माँ की ममताभरी गोद की गरमाहट की जगह झाड़ियों में पड़ी, खुद से दूर फेंकी हुई वह निष्पाप कली.. जो अभी पूरी तरह खिली भी नहीं थी, ठंडे तूफानों मे भूख से बिलखती आखिर कब तक बच सकती थी? बहुत बुरा लग रहा था| पर अब आगे की कार्रवाई करना भी जरुरी था| भीड़ में जमा लोगों से पूछताछ की पर किसी को कुछ पता नहीं था| बारबार मन में एक ही सवाल घूम रहा था, आखिर ये घिनौना काम किया किसने? कोई कुमारी माता? जिसे अपने पाप दुनिया के सामने नहीं लाना था। या फिर कोई परिवार जो लड़के की जगह यह अनचाही लड़की पैदा हुई इसलिये उसे यूं फेंक गया? जांचपड़ताल में तो ये पता चल ही जायेगा| पर इसमे जो मुजरिम सामने आयेगा उसे तो मैं नही छोडूंगा| क्रोध, चिढ-चिढाहट, दर्द, आक्रोश, बच्ची के प्रति सहानुभूति सारी भावानाओं ने एकसाथ तूफान मचाया हुआ था।

किसी तरह दिल को तसल्ली देते हुए, आगे की कार्रवाई के लिये बच्ची का मृत शरीर जिला अस्पताल से मैंने अपनी कस्टडी में लिया। कुछ और साथीदार भी साथ थे। पुलिस की ड्युटी में हमे किसी केस में ज्यादा भावुक नहीं होना पडता है,कभीकभी थोड़ा कठोर भी होना पड़ता है पर न जाने क्यों? बीते कुछ घंटो में उस बच्ची का मासूम चेहरा दिल में घर कर गया था। पूरी इबादत के साथ उसे विदा करने का मन हो रहा था। यही सोचकर मैंने उसके लिये एक गुलाबी रंग का फ्रॉक, दूध की बोतल और कुछ फूल लिये। आखिरकार वो पल आ गया। क्या बताऊं? बेजान होने के बावजूद उस गुलाबी फ्रॉक में बिल्कुल परी सी लग रही थी। उसे झूले में रख रहा हूँ यह सोचकर उसके लिये बनायी गई कब्र में उसे रखा। उसके चारो ओर कोमल, रंगबिरंगे फूल सजाये। उसके छोटे-छोटे हाथों में दूध की भरी बोतल थमाई और दिल पर पत्थर रखते हुये कुछ मिट्टी उस पर बिखेर दी।

"बहुत हो गया! अब आगे कुछ मत बताईये, नही सुना जा रहा अब'' आंखों से बहते आंसुओं को पोंछते हुये, दुखी मन से अदिती बोलीब" इतने साल हो गये आपकी नौकरी को, आजतक आप इतने उदास इतने भावुक कभी न हुये। आठ साल हो रहे हैं। हमारी शादी को पर अब तक माँ-बाप बनने का

सुख नहीं मिला हमें। कहीं न कहीं यही बात दर्द दे गई न आपको आज के हादसे से? "अदिती रो रोकर बोली|" मुझे गलत मत समझना अदिती| मुझे तुम्हें ठेस नहीं पहुँचाना था, न ही तुम्हे दुखी करने का इरादा था| मैं तो सिर्फ ये सोच सोचकर जल रहा हूँ– कि, न जाने हमारे जैसे कितने और दंपति होंगे जिन्हें माँ-बाप बनने का सुख नसीब नहीं होता| क्या कुछ नहीं करते वे लोग? हमने भी तो किया न? इलाज करवाया,पूजा-अर्चना तक की,पर क्या हुआ? और वो लोग जिन्हें आसानी से ये सुख मिल जाता है वो लोग ऐसी निर्दयता दिखाते हैं अपने ही बच्चों के साथ बेटे और बेटी में फर्क करते है... कुल के दीपक की चाहत में कानूनन जुर्म होने के बावजूद लिंगनिदान परीक्षण करवाते हैं, गर्भपात करवाते हैं। इन सब में शायद कभ-कभी जन्मदाती भी घरवालों के दबाव के आगे हार जाती होगी। पर.... हमारे जैसे अपत्यहीन किन दुखों से, यातनाओं से गुजरते हैं,कोई सोच सकता है? बच्चे की तुतलाई आवाज में माँ-पापा सुनने को हम कितने तरस जाते हैं? उनके कोमल हाथों के स्पर्श करने के लिये कितना इंतजार करते हैं? इसके बारे में तो सोचना चाहिए न उन्हे। बच्चों को खुद नहीं पाल सकते या नहीं रखना चाहते तो कम से कम किसी अनाथ आश्रम में ही छोड़ देना चाहिये न, ताकि कोई अपत्यहीन दंपति उन्हें गोद लेकर अपनी ममता उन बच्चों को दे सके" चेतन गुस्से में बोल पड़ा। थोड़ी देर शांत होने का प्रयास चेतन कर रहा था, पर नहीं हो पा रहा था। बारबार उसे वही परी का चेहरा याद आ रहा था और वो ज्यादा बेचैन हो रहा था। दीवार पर हाथ पटकते हुये चेतन बोला– वजह चाहे कुछ भी हो, पर एक निष्पाप जान को यूँ मरने के लिये छोड़ देना.....कचरे में फेंक देना ये सारी हरकते मानवता के नाम पर कलंक है। जबतक लोगों के विचार परिवर्तन नहीं होंगे तबतक ये सब यूँही चलता रहेगा इसे रोकना जरूरी है। शुरुआत मैं करुंगा मैं इसके सतह तक जाउंगा। चाहे कुछ भी हो मैं मुजरिमों को ढूंढ कर रहूंगा | जब तक मैं उस नन्ही परी के कातिलों को सजा नहीं दिलाऊंगा तबतक चैन से नही बैठुंगा।

"सुनिए .... ड्युटी की वजह से ही क्यों न हो पर आपने किसी की अनचाही बच्ची को अपनी चहीती बनाकर उसे बड़े प्यार से विदा किया है| ये बहुत बड़ा पुण्य आपके हाथों से हुआ है। हो सकता है इसी का फल हमें मिला है।" अदिती ने आशा के साथ कहा।

चेतन थोड़ा चौक के बोला "कैसा फल अदिती?"

अदिती ने कहा–"निर्मयी अनाथ आश्रम से फोन आया था। कुछ दिन पहले कोई एक बच्ची छोड़ गया था आश्रम में। उन्होंने कहा है हम एक बार उस बच्ची को देख लें।"

चेतन की आंखे चमक उठी। दिल हर्षित हो उठा। अदिती का हाथ अपने हाथों में लेकर चेतन ने कहा–"अदिती, हम कल ही आश्रम जायेंगे। उस नन्ही परी को हम साथ लेकर ही आयेंगे। सारी औपचारिकतायें कल ही पूरी कर देंगे। उसे दुनिया की सारी खुशियां देंगे। किसी की अनचाही बेटी को हम अपनी चहेती बना कर रखेंगे|"

दोनो की आंखों में खुशी के आंसू झलक गये। हाथों में हाथ थामे, खिड़की से बाहर, उगते हुये नये सूरज को देखते हुये दोनों आने वाली नन्ही परी की यादों में डूब गये। नए साल के सूरज की रोशनी चेतन और अदिती के संसार को भी रोशन कर गई।

**तकनीशियन-1, विद्युत लोको शेड,**
**अजनी, मध्य रेल, नागपुर**

# मराठी खंड

**रेंज ने माणूस समृद्ध झाला... !**

**प्रफुल्लचंद्र सुलेखा बजरंग सज्जन**

टावर साठी वृक्ष तोडून सावलीच गमावली

रेंजने माणूस समृद्ध झाला माणुस की गमावली

स्वार्था पोटी निसर्गा वर गर्व करू लागला

प्रयोगशाळेतील खाऊ लागला

घाण लागेल म्हणून दूर राहू लागला

मातीचा गंध भुलू लागला

सिमेंट लाच चिकल म्हणू लागला

बाल्कनीला अंगण म्हणूनअन्...

शोभे पुरतीच कुंडीत रोपे लावू लागला

टावर साठी वृक्ष तोडून सावलीच गमावली

रेंजने माणूस समृद्ध झाला माणुसकी गमावली

**कनिष्ठ लिपिक**
**इंजीनियरी विभाग,**
**सोलापुर**

**आसाम, अरुणाचल, मेघालय-**

**राजश्री बिराजदार**

पट्टीच्या पर्यटकांना ईशान्येकडच्या सात भगिनी पाहण्याची इच्छा असतेच तशी ती आम्हालाही फार पूर्वीपासूनच होती. सिक्कीम ,मणिपूर ,नागालँड ,त्रिपुरा , आसाम ,अरुणाचल ,मेघालय ही ईशान्येकडील सात राज्ये सेव्हन सिस्टर्स म्हणून ओळखली जातात.ही उंचावरील ,दुर्गम राज्ये इतर भारतापासून बरीच वर्षे तुटल्यासारखी राहिली होती.पर्यटनासाठी त्यांचा विचार अगदी अलीकडे दहा वर्षांपासून केला जात आहे.2014 ला आम्ही पहिल्यांदा सिक्कीमला गेलो होतो तेव्हा तिथले रांगडे व अस्पर्श निसर्गसौंदर्य पाहून चकित झालो होतो.तेव्हा सिक्कीम पर्यटनात नुकतेच उतरले होते.आता ते रुळले आहे.आणि ही तीन राज्ये आता पर्यटनाच्या नकाशावर चमकू लागली आहेत. संधी मिळेल तेव्हा ही तीन राज्ये करायची असं आम्ही ठरवलं होतंच .यावेळी कॅप्टन नीलेश गायकवाड कंपनीची जाहिरात बघून विशेष काही प्लॅन न करता अगदी अचानक आम्ही ही ट्रिप ठरवली.

नेहमीच्या घरगुती ,शारीरिक,ऑफिसच्या अडचणींवर नेटाने मात करून गेलो एकदाचे.यावेळी पहिल्यांदाच बारा दिवस बाहेर असणार होतो.पण बारा दिवस कसे गेले काही कळलं नाही.प्रत्येक दिवस इव्हेंटफुल होता.

प्रवास भरपूर करावा लागला तरी बाहेरच्या सौंदर्यामुळे तो काही अपवाद वगळता सुसह्य होता. आसाम ही या तीन राज्यांची सांस्कृतिक आणि भौगोलिक मातृसंस्था आहे. आसामच्या वर अरुणाचल आणि खाली मेघालय अशी भौगोलिक रचना आहे. ट्रिप प्लॅन करताना आधी कोणतेही राज्य घेऊ शकतात.प्रत्येक राज्यातील दोन शहरे किंवा गावे होतात.

आमची टूर आधी मेघालय, आसाम ,अरुणाचल अशी प्लॅन केली होती.शेवटी परत जाण्यासाठी आसामलाच यावे लागते.

प्रत्येक दिवसाचा सविस्तर वृत्तांत मी लिहिला आहेच. कोणतं राज्य जास्त आवडलं असं कोणी विचारलं तर काय सांगावं हा विचार केला, तेव्हा मी किंचित संभ्रमात पडले. आवडत्या तीन गोष्टीतून एकाची निवड करा असं सांगितल्यावर जो गोड संभ्रम निर्माण होईल तसा हा संभ्रम आहे. तिन्हीतला गोडवा मनात ठेवून मी अरुणाचल प्रदेशची निवड करेन. मी जसवंतसिंह रावतची गोष्ट मनात ठेऊन या ट्रिपला गेले होते, हे एक कारण, दुसरे कारण म्हणजे सौंदर्य ,संस्कृती आणि शौर्य यांचा मिलाफ येथे आहे.
या तीन राज्यांचे तात्विक वर्णन करायचे झाले तर आसाम सत्यं,अरुणाचल शिवम् व मेघालय सुंदरम् आहे असे मला वाटते.

आसामची बहुविध वैशिष्ट्यपूर्ण संस्कृती, अरुणाचलचे भू राजकीय महत्व व मेघालयाचे निखळ, अवखळ, केवळ सौंदर्य असे हे भुरळ पाडणारे त्रिकुट आहे.या तिन्ही राज्यात दिसलेल्या मातृसत्ताक पद्धतीच्या खुणा मला खूप सुखावून गेल्या हे मी पुन्हा एकदा सांगते.सगळीकडे स्त्रिया पुढच्या आघाडीवर आत्मविश्वासाने वावरत होत्या.पुरुष मागच्या आघाडीवर शांतपणे काम करत होते.हे चित्र इतर भारतासाठी नवीन आहे.कामाख्या देवीच्या गोष्टीने या सुंदर चित्रावर जणू दैवी सही केली.

अरुणाचल मध्ये भारतीय लष्कराचे सामर्थ्य ,त्यांचे खडतर जीवन ,अतुलनीय त्याग यांचे दर्शन होते.ते पाहून गर्वाने मान ताठ होते तर कधी आपल्या संकुचित , आत्मसंतुष्ट वृत्तीची लाजही वाटते.

राष्ट्रभक्तीचे कोरडे उमाळे ,आणि पोकळ गर्जना करणारे आपण वास्तवापासून खूपच दूर आणि अनभिज्ञ आहोत हे ही जाणवले.

निसर्गाची मनमुराद उधळण असलेले हे तिन्ही प्रदेश आपापली सांस्कृतिक अस्मिता ,विविधता शांतपणे कुठलाही अभिनिवेश न दाखवता जोपासत आहेत हेही उर्वरित भारताने लक्षात घ्यावे असेच आहे.

अरुणाचलमध्ये बौद्ध तर मेघालय मध्ये ख्रिश्चन धर्माचे प्राबल्य आहे पण ते लोक स्थानिक भाषा आणि संस्कृतीशी एकरूप होऊन गेले आहेत. आसाम कला ,संस्कृती ,निसर्ग सर्वच बाबतीत समृध्द राज्य वाटले.

इथल्या जंगलात नेचा ,ऑर्किड,रंगीबेरंगी फुले यांची मनसोक्त उधळण होती.धबधबे तर काही विचारूच नका..

नुरानांग धबधबा अविस्मरणीय होता.तसाच मेघालय मधील लिव्हिंग रूट ब्रीज खूप आवडला मला. डावकी नदीतली बांगला देशची सीमा मजेशीर होती.

काझिरंगातील रोमहर्षक हत्ती सफारी..गेंडा दर्शन... तवांगचे जसवंतगढ़, वॉर मेमोरियल काळजात रुतून बसणाऱ्या गोष्टी... शिलाँगच्या निती आणि लव्हली या दोन गोड भगिनी , बोमडीला येथील हॉटेलची अदबशीर,

अतिथ्य दाखवणारी मालकीण या लक्षात राहतील... इथला खडतर प्रवास लीलया करणारे कुशल आसामी ड्रायव्हर यांचा उल्लेख न करून कसं चालेल? खूप कष्टाळू लोक आहेत हे. किती क्षणचित्रे आठवायची..

प्रत्येक राज्यात किमान आठ दिवस घालवायला पाहिजेत तर तिथला खरा सुगंध अनुभवता येईल.हा फक्त हुरहुर लावणारा व उत्सुकता वाढवणारा ट्रेलर झाला...

तरी हे ही नसे थोडके, असं मनाला समजावलं.. ट्रिपचे नियोजन तवांगचा अपवाद सोडून उत्तम होते. आमचा टूर मॅनेजर उदय कुमार दास हा सगळ्यांना जीव लावणारा ,काळजी घेणारा तरुण होता.त्याने सगळ्यांची उत्तम काळजी घेतली.वेळेचे परफेक्ट नियोजन केले.ग्रुपमध्ये वेगवेगळ्या स्वभावाची,

वेगवेगळ्या वयाची माणसे असतात.हळूहळू ओळखी होतात.मने जुळतात ,सवय होते तोच निरोपाची वेळ येते.आमच्या ग्रुपमधले एक ज्येष्ठ रमेश आबादे यांनी शेवटच्या दिवशी 'अशी पाखरे येती ' हे गीत म्हंटले तेव्हा सगळ्यांचे डोळे पाणावले. आता पुन्हा आपल्या रुक्ष जगात प्रवेश करायला मन नाखूष आहे....

ये जीवन है , इस जीवन का यही है, यही है रंग रूप....
आमेन....

**मुख्य फार्मासिस्ट, रेलवे हॉस्पिटल**
**दौंड, सोलापुर मंडल**

**फुलपाखरू**

**संजय त्र्यंबकराव उस्तुर्गे**

फिरे उडे बागडे फुलपाखरू..
घेऊन साजमखमलीचा ...
विजार ती ठिपक्यांची...
असे कायाकोमलतेची ....
मनात हळव्या बागडे फुलपाखरु..!

भिरभिरे स्वछंदे आनंदे...
भरती ओहोटी भासे चालिला ...
स्वर मंजुळतेचा लाभे बोलिला...
टिपे परा गलति का सेवनाला..
मनात हळव्या बागडे फुलपाखरू..!

प्रक्षालुन रंग निसर्गाचा ...
इंद्रधनुष्य उभारे पिसांचा...
करती हरण रुप गर्वितांचा...
पिसारा उभारुन सुवर्णांचा...
मनात हळव्या बागडे फुलपाखरु..!

चाल चाले तुरुतुरू ...
भासे सुंदरतेचा महामेरू ...
पांघरुण पिसारा अंगावरी ...
धरती फेर त्रि तालावरी ...
मनात हळव्या बागडे फुलपाखरू...!

**संरक्षा सलाहकार (लोको)**
**सोलापुर, मंडल**

## सावित्रीबाई

**मनोज ले. गावंडे**

आता कसं सांगू तुले,

कसं कसं सांगू तुले,

कसं सांगू तुले गं

सावित्री फुले........

झालां पोराचां जलमं पेढे

वाटले थारातं............

अशा कित्येक सावित्रीआम्ही

मारलया पोटातं................

बाईलेच वनवासअग्निपरिक्षा

हितिले, अग्निपरिक्षा हि

तिले गं सावित्रीबाई फुले

आता कसं.....

लेकं लाडा नवसाचांत्याची

अवघीच सोय

दु:ख लेकीन सोसावं जात

बाईची ती होय...........

चुल फुकतां फुकतां डोये

सदा तीचे ओले सदा

तीचेओलेगं सावित्रीबाई फुले

आतां कसं ...............

मुलगी परक्याचं धनं तीच्या

लग्ना साठी हुंडा.....

सोनं देहुन ही तीच्या नशिबान

पडेधोंडा.........

नाही सरले अजुन तीच्या

जलमाचे येलेगं सावित्रीबाई फुले

आता कसं.....

मुलगी शिकली तरी ही नाही

अंधश्रद्धा गेली..........

केले उपासतापास पुजा

दगडाची केली.............

घाले नव-याच्या साठी फे-या

बडाच्या झाडाले गं

सावित्रीबाई फुले

आता कसं सांगू.........

**कनिष्ठ लिपिक**

**प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर कार्यालय,**

**मध्य रेल, मुंबई छशिमट**

# हिंदी साहित्य के सुप्रसिध्द साहित्यकार

महादेवी वर्मा

सुभद्राकुमारी चौहान

सुमित्रानंदन पंत

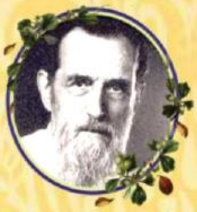

फादर कामिल बुल्के

सुर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

रामधारी सिंह 'दिनकर'

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

हरिवंश राय बच्चन

राहुल सांकृत्यायन

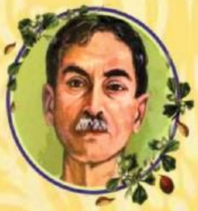

मुंशी प्रेमचंद

आचार्य रामचंद्र शुक्ल